व्याज्य जात्र विका

মূল্যঃ--অগ্রিম বাধিক গাও, ডাক মাশুল গাও, বাগাসিক ৩৭০, ডাক মাশুল ৭০,ত্রেমাসিক হার্নত, ডাক মাশুল । নও আনা। অনগ্রেম বাধিক গাও, ডাক মাশুল গাওটাকা বিজ্ঞাপন প্রকাশের মূল্যঃ—প্রতি প'তিন, প্রথম, দ্বিতীয় ও তৃতীয় বার ১০, চুর্ত্ব ও ততোধিকবার ১০আনা।

৭ম ভাগ

किनिकां चाः - २३७ देकार्ष श्रम्भि विवास, मन ১२५३ मान। हे १३३ जून ३५१४ श्रं जम।

३५ मश्या

বিজ্ঞাপন।

वाङ्गाला (मत्नंत्र जलां जिल्लां क्रिकां क्रिका श्विक होहेरकां है व्यव जूषीरकहारत्रत मां धांतर्थ नश्दत्र मकिदागांत पिष्ठिक जानुमादत्र (य गक-मिगाय निम लिथिज वाजिशन वामी जाथा९ वाञ्चला প্রদেশের অন্তর্গত মুর্শিদাবাদ জেলার व्यथीन व्याक्तिमशक्ष वाभी वृक्ष भिर ध्वरः वित्यान होम योश्री किलकोडा महत्रत्र वड वां जारतत काम खीरिं यूलठां न इरतक छान नाय मित्रां नात्अ नील हो महत्रक हो मना भारत क्रिय़ वावमा क्रात्र, अ ग्रूज রाधार्शाविक मार्थ्र अल्लां जित्र जागांना ला अनामांत्र शन, धावर (य भकम्भाग्न निम्न लिथिक वाकि भन প্रতिवानी ञाथां य ज ताथा (शाविक भाषां त नावान श मलानगन व्योनियाम माञा এवर इतिधन माञा छ छे क ग, ७ व भा शाविक माव विधव। खी धवर ऐक नावालश मखानशरणंत त्रिक्ता जीमि कूवजा मामौ यादाता मकल्लाई कलिकां महरत्र जलर्ग इ. हे तथालात (भाजावाजात खीरिहे वाम क (त) এবং যে ডিক্রি এক ছাজার আট শত छोशां खत थ, खोदमत २३ जान्याति जातिएथ দেওয়া হয় সেই ডিক্রি অনুসারে এই বিজ্ঞাপন দেওয়া যাইতেছে যে ম,ত রাধা গোবিন্দ সাহার मगुम्य পा अनाम विश्व । এक হাজার আট শত (छोशा खत्र थ , छो दिन इ जा आंशर छेत शृद्य (का छे श्रुरेश श्रुरेकारित जनाज्य जज जनादत्रवल जांत्रथंत জर्জ गांकिकात्रमन मार्ट्यत मगोः ल উপস্থিত হইয়া তাহাদের স্বস্থ পাওনা ও नावित वियय প्रभागं कतिदवक, छे क जातिरथत मरक्षा यम (कइ डेशश्विज ना इय जादा इहेल তাহারা হাইকোটের উক্ত ডিক্রির ফলোভোগ इहेट ज एक भार विश्विज इहेटवक।

वाशये सामात वाहेशे जातिश्व श्राताः धाशांत्रों अग्र स्वाहित्रां छेल मावी मकल मन्रद्य विष्ठांत्र इहेरव।

व्यत थवश हार्तिम वामीत्रवाहिनींगन,

कलिका । हाइटकां व्यापिम) व्यात (वन टिमार्ग विकाश । २ इश जून । ३৮१८ । (त्र (क्य स्ट) त

ब्राष्ठा जात्र त्रांधाकाख (पव वार्षि, दत्रत अव कन्ने फ्रम

দ্বিভীয়বার মুদ্রিত। याञ्चाला जकदत्र श्राप्त मश्था। श्राकान इड्याटि युला ३ होका, एाक मायूल /॰ जाना छाडि यादम धक धक थक धकान इहेरवक मिवनाशताक्तत भौखई श्राकाश इहेरवक।

> खीवत्रमाकां ख मिव कां १,

क्यांका इत अर्गल जा नार्य (य डेशांथान श्रकाश्विक इर्याहिल छारा धकान शुखका-कादत त्रु जिं इहेशा आंशांत निकंछ ७ हिन्सू र्किल और्ड छङ्गांग हर्दिशांधांदात निक्दे

विकशार्थ श्राष्ठ जारह। मना ३ होका छाक गालन रं जाना।

व्यादाना हक् वत्नार्शिधांश कार्गान लाहे बाबि। কলিকাতা।

वित्रभान (लान आंकिम निमिट्डिए। गून थन २०००० होका, छाछि जां राभात गूला २० होका, ৩০০ অংশ বিক্রয় অবশিষ্ট আছে যাহার इष्ट्रा क्य क्रिंड श्राद्यन।

व्यीभारीनान त्रांश वि, धन ৫ इ देवभाश १२४)। (मत्निष्टिश फिद्रकिरेत

অধিকারতত্ত্ব।

निक्षांतिज ५० जानात প्रतिवर्छ ॥० जान। एक-गालन । किनकां जा निर्वाक्त मगा द , जग्र বাজার প্রেসে ও দারভাঙ্গায় এন্থ কর্তার নিকট शां अशे याहे दव।

वामा পরিবর্তন।

এভদারা আমার আত্মীয় স্বজন ও বন্ধু বান্ধব দিগকে জানাইতেছি যে আমি শোভা বাজার নন্দরাম সেনের গলি নং ১০ বাটীতে বাসা পরিবর্ত্তন করিয়াছি। তারিখ ১৮ই জ্যৈষ্ঠ

क्रीमिन्ध्यने पछ इ। इरक १ ए व डिकी ल

क्राफ्रीक देखल। नितः शिष् ।

गानिक পরিশ্রাম, কঠিন চিন্তা, অথবা অন্ত कांन कात्रान छेला भीषा छे२भन्न इत्र । अहे जेयश मिवत्न जोश्र निक्ष याद्योगा लाज १ (वक । जे उषध कलिकां जा शिरु लाज । जा त्रां का वा कि विद्या विद्या । १७ नः उवान उन् कतिल शाहितन। मूला প্রভাক मिलि॥० जारे जाना गाज।(७)

व्यागायी এक श्राकात व्याहे भाउ हो । লের তেরই জুন শনিবার বৈকাল বেলা আড়াইটার এক হাজার আট শত চৌয়াত্তর খৃষ্টাব্দের। সময় বাঙ্গলা দেশের অন্তর্গত ফোট উইলিয়ামের धलाकाशीन शहरकार्ड व्यव कुछिरकहारतत व्यि नाती अति जिनाल मिविल जुनिम िकम्पन (ति जिन्ने। दिन षाता (काढे हा छेटम ভा हात (मन करम এक हा जात वाहे भंड वाञ्चावत माल्यत ४०३ नम्दत्त मकर्ममात ডিক্রি অনুসারে যাহাতে এক হাজার আট শত वाशाख्य माल्य वात्र जिल्ला जात्र जात्र जाति । वामी जवर बल्लव माम প্ৰতিবাদী থাকে নিম লিখিত मन्भि विक्य इहेर्व, व्यर्श मगुन्य भाका भाष-नित वाछी किश वारमाशरगाभी गृश मर्ग छेश्त मागील मश्लग्नं जिमि यादा छित्य है बाता क्य त्यन এक विषा উनिम काछ। जाछ इछाक श्रितोङ्ड इहेश्रांट्य। वाष्टीत मादिक नमत १५। १२ ছिल এवर वक्त ७१ ७ ७৮ इहेशाटा धवर ऐहा किनका जा महरतत अलगं ज आतरमनियान छि. । উহার চৌহদির বিষয় নিম্নে বিস্তার করিয়া लिथा गाइट इंट्इ, व्यर्श ९ डेश्त मिक्ट वात्रानियान छि हे नामक अखा, शश्चित्य शहाशानि, छेखद अध्य मिवक गोलियात श्राकात जिमि धवर शृद्धि भौतिन

यादाता वाडी थतिम कति छ । न जादाता डेहा थितिम कितिवांत शृद्धि छेशत अञ्च मश्कांख पिलल मखादयज (मिथदवन।

अञ्च मः का ख पिलात कु अक ध्वः विकास्त निश्च ममूनाश दादे किटित व्यतिकिनां कूरिम किन-मत्नत तिकिशे । दित्र वाशिक्षा किन्न। किन्ना किन ऐहे। हे मान, हा देश जवश अया हे कि आदन व विदिख रिक्तरत्रत मगत्र उ देश श्रीमर्भिंड इरेरव।

কলিকাতা

राहेदकार हे त রেজিফ শরের আফিশ

व्यात (तल (हशान রেজিটার

36 FT 1 3698

विवाइ डक्रनां हेक।

मला ॥० व्याना जाकमाञ्चल /० व्याना । व्यम् वाजात পত्रिका जाकिम, कल्ल जंही हे कानी श्लाहे নিকট প্রাপ্তব্য।

B. M. SIRCAR'S ABROMA AUGUSTUM.

वाधक (वजनात गढ्शेय्य।

প্রায় এক বার সেবনেই যাল্লণা হইতে व्याद्वाशा लां इ इ । अ असादिश हित वा।-घीज पृत्र कदत्र ।

উক্ত ঔষধ এবং দেবনের নিয়ম ডাক্তার जुवन (याञ्न मद्गकाद्व निक्छे कलिका जा हात्रवागान मूक्त्राम वाव्य छि ११नः ७वतन **जज** कित्र एल खार्थ इडेरवन।

बुला ७।।० होको मांश एकमा छल । वि, এম मत्रकांत (कांश (ठांतवांशांन कलिकांछ।।

वािष्ठा डेग्रामिनौ। नाउक ।

यूला १०/० इर व्याना। जिक्शां छल /० धक व्याना অমৃতবাজার পত্রিকা আফিলেন, পাবনার অন্তর্গত চাটগোহর হরিপুর জীযুক্ত বাব হরি নাথ বিশ্বাদে-त निक्छ এवर বোয়ালিয়।য় তীয়ুক্ত বাবু ছরি কুমার वार्यत निक छ श्राश्वा।

मर्का भक जुत्तत गर्श्यभा

गर्ख गर्ख शरीका दाता धरे छेगा धर खन गतीकिं इहेशार्छ। छ्शनी ७ वर्षमान প্রভিতি সংকোমক জুর প্রাণীড়িত জেলায় ইছা वाङ्ला जा वावङ्गंत इहेट ए । जुत, शोङ्ग यक्र (माथ खार्जि य ममख शीष (मत्नि दिश व। অভিরিক্ত কুইনাইন ব্যবহার দার। জন্মে ভাছার বিশেষ প্রভীকারক। মূল্য ২ টাক। याश डाक्या छन।

जार्भातात महोग्य।

विश्लिष शतीका षाता श्राज्ञ इहेगार्ड ट्य इंडा बाता मर्वाधाकांत जार्ना धक्कारन जा (वांशा हय । म,ला ।।।॰ छोका श्रायणंक मालना

छ। कदबादभ व यदशेयथ।

जादनदक्त विश्वाम (य, होक कथन जा-द्वाशा इय ना किन्न ध अभभ वानहां कर्विता (म भक कारभाई मृत इहेर्व। गुना ऽ॥० होका यां य ए । क्या ए ल ।

উक्त छेयथ कर यक्ति कर्छ या निम् छि. है ७८ नः ভবনে छोयुक्त (वर्गिक्नांन ভाइजी निक छै। शाख्या या इत्व।

ভয়ানক অত্যাচার। खड़े श ज थानि जागता जथार अधार जिंदन कितिनागः— यर गंगा । शंज गंतल मिटम वां जि जां मामितां व व थिनित्र श्रद्भत भगमा जलाम् बीयुक्त वातू शाभान जला यांच धनः बीयुक वांतु गर्भम्ह क वसूत वाहित्व (यक्तभ ष्ण जावनीय काछ इहेया शियाद्य जाहा जार जार ज এমন কোন মনুষাই নাই যে, ক্রোধে তাহার শরীর রোমা-शिक्ष उ किन्त्रिक नो इशा यिन शतना वाबूत वाहित्क পরিবার থাকিত ও গোপাল বাবুর বাটীর সদর দরজা श्वन धवर पृष् ना इइंड, डाइ। इइंटन य कि ख्यांनक ব্যাপার উপস্থিত হইত তাহা প্রকাশ করা ছঃগাধ্য। উक्ত मियम देवकारल कर्शक जन किति इवक देशित. छे छ शोशन वाबू अ शर्गन वाबूत वाहित शान् वर्डी शिलित गर्था यू फि छे छो है छ छिल। तिश्व इश अन्योपिक মহাশয় অবগত আছেন যে, যদি কাহার যুঁতি কাটিয়া यांत्र छोद्दा इहेल्ल (य क्षे घं फि धतिए भारत का छोट्। গ্রহণ করিয়া পাকে। কিরিজিদিগোরও সেই রূপ ঘটিয়া ছिল। উহাদিগের একখান ঘুড়ি কাটিয়া যাওয়ায় কোন विष्णि विषक विष इस छेश शह्म क तिस छिल। किन्छ কে লইয়াছে তাহা ঠিক করি ত না পারিয়া ইতগুতঃ ঢিল इं एटिंड जिल्ला थवर उस जन ज्ञान विविध क्रिनिर शालिशोनाइ कितिए ছिन। এমন कि कि इहें माइम क-तिया वाषीत वाषित इहेट भातिन ना। ताखाय (नोरकत याञाशांञ धांश वन्म इइशा छेठि:न। कन विला व इति याञ्च नामक জনেक वालक वाजित वाश्वित वाशित छेशिमिशं कि किल (य जिंग्या किन इं हे कू ज़ि ज़ि ? তাহাতে তাহার। আরও বাড়িয়া উঠিল এবং তাহাকে मातिए छेमा ७ इइल। এমন সময় আয়ুক্ত বাবু গিরিশ তন্ত্র বসুবি এল নামক জনৈক ভদ্র লোক আসিয়া, किति कि वालकि मिरक शालि मिर्ड उ इं हे हू छिट्ड निय्ध - क्रिलिग। किन्छ यथन शितिमं नानू जे वालकि मिरशंत मिह्छ कर्थाशकथन क्रिडिइलिन, (महे मग्र छेह्-माद्यक मद्भ लहेश। (महे स्वांत जामिशा छेशिष्ट इहेल। मार्ट्य जामियाई जिक्कामा क्रिलिम (क তোমাকে গালি দিয়াছে। তাহাতে সে হরি মোহনকে मिथाइँ या किनि इप्राट्या इति साइत्न भार्ल इन्ही ठण मातितलम। इर्जाम। इति यादम कामिट माशिन। जथन शितिम वार् छेश्पित मम्मु तथ याह्या জिक्डांमां कि इत्लिन, 'जुमि (कन छेश्कि मातिलि? जुम জান পুলিল আছে?' তাহাতে দে উত্তর করিল, আমি श्रीलिशंदिक खग्न कर्त्र न।। इश् अनिया शिविण वर्ष अदिनक লোককে পুলিশ ডাকিতে বলেন, পুলিশ ডাকার কথা खिनिया मांज मां भागे रेगारे के दिना मांज कि तिन । जार्गि क গিরিশ বারু কহিলেন পোলাইও না, তোমার নাম 'কি?' সে তাহার প্রত্ত নাম ভাড়াইয়া উত্তর দিল ষে, আমার নাম হারিস। তৎ পরে 'তুমি থাক কোথায়' वहें कथ। জि ज्ञामा कराय मा ठकू तक वर्ग करिया। कि इल "वागि विलिए ठाई ना।" जाङ्गि कि वातू কহিলেন, 'ভোমার অবশাই বলিতে হইবে।' ইহা শুনিয়া সাহৈব রাগান্ধ হইয়া তাহার সন্দিন্তক, তাকিয়া গিরিশ বারু প্রভৃতিকে মারপিট করিতে আরম্ভ করিল। পরে যখন শুনিল যে পুলিষ আর্গিয়াছে তখন তাহারা পালাইয়া আপন আপন বাটিতে চলিয়া গেল। আমরা मकल्लिहे निन्छिल इहेलांच (य मकल शाल चिछिया शि-য়াছে, কিন্ত কি আশ্চর্যা! রাত্র প্রায় ১১ ঘটিকার সময় अञ्चाम 80 । (৫) जन किर्तिक आमिश्रा প्रश्रम शर्भका চল वसूत वाहि वाक्रमा करत। उथन शर्भन वाबू डाँहात थाना इरे जां जां र मिर्ड यमादा यां श्रेत करिएड हिलान। উহারা ক্রমান্তরে হুইটি দরজা ভালিয়া গাণেল বাবুর নিকট উপত্তিত হইয়া ভাঁহাদিগের ভাতের থালা গুলি জুতা দিয়া ফেলিয়া দেওয়নান্তর ভয়ানক প্রহার করিতে वार्ड करिन, धमन कि घुमा मादिशा धक धक जात्नत वाश्राम १। ७ छि करिया मां छ छा बिया निया छ। नाक छ ভিজিয়া शिशाद्ध। बद्ध शद्भम बाबू ध्रेन्नश ख्यांनक थ्यश्रां मश्ब्याश्रा रहेल छेराता छैरिक वर्ग ल ल-ইয়া গোপাল বাবুর বাতির সমুখে আসিয়া উপাস্থিত

इहेल। शोशील वार्त वाहित लाक खेताश खनजा (म-थिशो দরজা रक्ष बित्रशो फिला छेश्रता याह्यो प्रका ভাঙ্গির নিমিত্ত আঘাত করিতে লাগিল, কিন্তু ভা-क्रिंड ना शार्तिया हे । इत्रिंड वार्त्य क्रिल । निष्पारी शोशोल वांब्त शारित ल छन ७ वांछित मामी थड़ খडी ञदनक ভोक्तिश शिल। वार्षित ছाम इहेट मकटल श्रील गर क्रिश हो ९कां व क्रिड लाशिन। श्रीनम (काथां श! পুলিশের শব্দ মাত্রও পাওয়। গেল না। তখন অনন; छेशांश इइंशा थिए कित पत्रका थूलिया खानक लाक ওয়াটগাজের পুলিশ নিকট গামন করিয়া এই ভয়ামক দৌরাত্যের বিষয় প্রকাশ করায় দেখানকার এক জন জ-योगोत कि इटलन 'लिय वावा (लाक का यात्र।' या । 'इया योशो अमिटक किति किशान जिन दोत्र आक्रमन करत्। वोहित ভিতর প্রবেশ করিতে পারে নাই। কিন্তু মহাশয়। যত क्कन जाकाता द्वाना नातूत निर्देश अहे स्वा করিতে ছিল ততক্ষণ পর্যান্তও গণেশ বাবুকে ছা ড नाई। शत्नन वात् जाङा फिर्शत वश्लाई हिल्लन। जल-পরে কিঞ্ছিৎ সুযোগ পাইলে তিনি ছুটীয়া একেবারে व्यक् न ऋ त्लं क क्लोडेर ७ स मर्था व्यक्त क द्वन। त्रांखा य ल्लांक ल्लाकांद्रगा श्रा थं अ ल्लाक थाका मद्य अक জনত সাহায্য করিতে প্রেল হয় নাই। সাহায্য করা मृद्र शोक मकल्ल जोगोमा (मिथिएं लोशिल। कि कूक्न **धहेत**े ज्यानक मित्राच कित्रा कितिकिशन हिल्या शिल।

२७ (म रिकाम

একান্ত বশস্ত্ৰদ

बीन दशन्य नाथ मजूमनात 25271 श्राहरमञ्जा वामादमन वामार कि धं कि धं कि कि লিখিয়াছ। ক্রমান্বয়ে ছয় শত বৎসর মুসলমান দারা নিজ্গীড়িত হইয়া যখন হিন্দু জাতির আবার পুন-ज्जीविज इहेवात खूजियां ज इहेल, यथन महाता श्रीराता मिथिक श वात्र क तित्त्व, यथन हिन्द्र क्या क्या मूमलमानिंदियंत छेशत जािंधिशं जा जात्र कितिलन, यथन (वाथ इड्ल ७७ काल शरत हिन्दु जाडि शताशीन भृश्यल इ हेट छेषात इहेग्र आवात हेथान कतिदवन, मिहे मगरा जाकूल गमूज পात इहेरा हेडेए रा भी रियं का जामि श्रा व्यावात व्यामानिया (मन्य विश्वकात कतिस्मन। शि-রিনি জাতি, আজি যদি ইংরাজেরা ভারতবর্গ পরি-जांश कदत्रन, कला यांश्रायां यांशादमत निकेष्ठ मूहि, भिथत निर्गत न्यांत वाला न्या इहेर्व, या श्राद्य होता छेल श्यन क्तित्ल व्यागारमत প্রায়শ্চিত ক্রিতে इইবে, ভাহা-प्तत गरशा करशक जन जनाशाटल पूरे जन मञ्जान लाएकत शृह्य প্রেশ করিয়া এই রূপ অভাগতার क्तिल। शं.नेन वांत्र पख छिलि ज्यं इहेश। शिशाद्ध वद छ। इंकि अनाक्ति अभाग अभाग अञ्च इइ ७ इइ-शाष्ट्र क्याग्रा व्याग्रा विद्य करो शाहेलाग, किञ्च তাহার এরণ অপমানিত হইয়া বাচিয়া থাকা বিড-त्रना गांदा। गृजू जिक मिन छ इहेर्वहै। र्जिन किन किनि किमिटिशन जिक जनकि वध किनिया প্রাণ ত্যাগ করিলেন না ? আতা রক্ষার্থে বধ ক-রিলে আইন বিৰুদ্ধ কাজ হইত না। আমরা তাহা হইলে তাহার দোনার প্রতিমূতি নির্মাণ করিয়া দে দিবস ইংরাজেরা যেখানে আউটরামের প্রতিমূর্তি श्राशन करतम जाशत निकं मश्याणिक कतिजाग। मिरम न्व भाषाल वावूत वक्क छ। लहेश ध मृत्थं ता छेপ शम कित्रिया हिन जा शांदा (मथून य छन উচ্চ শিক्ষ! अ शर्मा भिक्षा वाता आगारमत हत्ना ना। यपि गर्गमा वाब धवः छ। इ। त जारा कितिक मिशदक धतिया পাছका প্রহার করিতে পারিতেন, কি विक्रि कि वन्त्रक बाता छेशिक्टिशत इहि शाहिल वाइंड कतिएड शाबिएडन, जाइं। इहेल बाङ हिन्द জाতि भाठ इस ऐएक ऐथि इहेड, আজ आगाएनत উৎमाइ ७ वांभांत (व्यां अवां हिं इहें । गत्नंभा वाबू मखवडः छ्रिंगिक्ड इहेदवन, शितिभ वाबू ड

वि धल, धवश इंशापित धक्त भाषा इंशेन ना य जा-প্ৰাদিগের জাতি মান রক্ষা করেন। ইংরাজ শাদনে व्यागार्निगरक वह ज्ञान इंडडाना उ र्जानमर्थ करिहा (कि शिर्ष ! भाषान वावूत वा छीत मत्जा जा जि । ছে, ভাহার পরিবারেরা ভয়ে চী ৎকার করিয়া কেন্দ্র कतिट डट्ड, ज्थन (नोडाइशा (शालिट भत जाणश ल इटिं इहेल। वक्रवामिग्रान। (ज्ञायता कि छ। अ। गारमत खी, शूब, कना, गांड!, शिंडा, जांडा, शिंड्-जितक अहे क्रश अशयांन इहेट तका क बिट का अ, ना এখনকার ন্যায় শিষ্ট শান্ত ভদ্র লোক হইতে চাও । यमि ভোষাদের শরীরে এখনও কিছু মাত্র আর্ঘা জाতित ल्यानिত मकालिত इइटिंड थार्क, এখনও यদि ভোমর। আপনাদিপকে ভদ্র লোক বলিয়া অভিমান कत्र, তবে তোমাদের সম্ভান সম্ভতিগণ কে যেরপ উস্ট শিক্ষা দেওয়ার নিমিত্ত যত্ন করিতেছ, তেমনি প্রয়ো-জन इहे.ल তाङ्गत्र (यन छेमाद्यं मद्भ व्याज्यं कात्र निशिव मां क त तक भाव कतिएक भारत, जाशापत जिमाश्या वां उ ऐ दिल्ल कर्नर व थादा ध्वर व्या छ-गात्नत निगिछ कका उदत প्रान निष्ठ भात शहें तथ डे-शदनभा अर्थान कति । जामादन विद्वह्नां । ज्या लोक गाद्धत घदर व्याज्ञाक त निमिन धक धकिन ता-इत्कल वन्त्रक थोक। कर्न्जा भवनित्यक निक्षय इर् निशिवं मकल दक्षे भाषा मिट्दम।

क्रिश मखाढे ७ इंश्लंख।

५०३ (म जातिएथ क्रिमशांत मखां हेश्न एउ छे-शिष्ठि इहेशार्इन । इंश्लि उराभीता मगामरतत मद्भ ांश्रांक धोर्न क्रिया जिन श्रां ডোবারে অন তীর্গ হন। ইংলডের যুবরাজ, ক্সিয় मखोर्दित জागां ि छेक व्य এ ছिन्द्रा, । छैं। होत इरेट दिन अर्ग विर्ध जिन देश अम्दि छे शिष्ट्र अ इन। किमियानिकाटक इंश्लिए अन जाभातिवत ज-धिकांश्म (लाक घूगां करता, सूजतांश शांतरमात माहा व्यामाय इंश्लिए (लाकित (यक्तेश छेश्मव छेश्चिड इहेश्राहिल, छोहात किছूहे (मिश्रिड भा छशा याहेट उट्ह ना। তবে मश्रान शर्दात (कान २ मन्नान कता (म অভাব দূর করিভেছেন। তাঁহারা সকলে যোড হাত कतिया मखारित ख्व कतिर् ब्यांत् ख कतियार्ष व्यवश् क्रांनाश म्या है मार्क मिग्रक मामज न्था न रहेट मूक कित्राहिन विलिश छेटिके अदित छै। हात छ। मः था श्राक्ति ए एक । मक दल त छे शत इंश्ल : अत প্রধান সম্বাদ পতা টাই মদের গলা। টাইমদ স্ত্রাটকে खन खुं कि कि तिया निलिए एक स्व ति विशेषा दि स्व युका वारख इस मा ज वान्सिकारी जावि कारामिनिन भित्र (मार्य। क्रतामिमभानं यमि कूभतामर्भ ना मिट्डन তांश इहेटल हेश्तां एक्ता कथनहे अति प्रकर्ष किति एक ना धवर इरल ध य ध हे ऐ दिन दिन कि नियान मिर्नित मदन युक्त कदत्रम (म जाङ्गत शदक पिक्त इद्ख कित्रा — वाश्त कता इहेशाहिल। हे। हेगम जाद्रा र्वाल्टिছ्न य क्रिया এখন সভ্যভার উক্তভ্য প্রোণাতে আরুড় হইয়াছেন, সেখানকার প্রজারা অত্যন্ত स्थी, ब्राष्ट्रा भागन প्राणाली व्यक्ति छे क्रिके व्यश् इंश्लु किनायात शांत निक्छे अ मांडाईए शांत्रन न।। किंगिया मखादित इंश्लिख जागमन मञ्जू नाना क्रिश शन्य डेिशाट्य। (कर् विलिट्ड् यं डाँशत (यदा अथात्न क्यान जार्ड्य, कान करें इइट ज्हि कि ना जा इन्हें पि शिष्ट - जिन व्यागियां हिन, कि विलि छिन यहां ता नी त कना। विल-हि लात मदन जाँशत ज्बोय शुर्वत विवादरत घढे कालि कतिए जिनि जामिशा एक, (कहर वलिएड-ছ्न य मखार छेत कान निश ए जिल्मिक जारह।

क्रिकां मुखा छ व्यार्थन कन्त्रा इंश्लिए क मधाम इर्ज क्यादतत मदन विवाह पिटलन, डेंग्हात कन्या इंश्लिए जार्हन, अश्र जिनि इंश्लिए शिया महातानी धवर हेश्लखवामी मञ्जाख ल्लाकि प्रांत माज जाजी-য়তা করিতেছেন, কিন্তু তথাচ ভারতবর্ষ লইয়া ষে রুশিয়ার সঙ্গে এক বার যুদ্ধ হইবে সে আশক্ষা এখনও योश नाई। मिल्लिशिट जिट छेत का बूटलत मन्ना माजा लिथिशाष्ट्रम य गंड कला (३५ या) तांब व्या घषि কার সময় আবহুলা জান নামক এক জন সম্ভাম্ভ লোক অপর তুই জন সন্তান্ত লোককে সঙ্গে করিয়া व्यागित्तत व्यवःशृततत पात्त देशश्चि इन धवः बातशान बाता मधान शाठीन य जिन जाशिदतत मदम (मथा करित्वन। जारात विद्यां श्री का व्यादि। वात्रशंन मशाम मिटल व्यागित जाहारक व्यामित्तत निकरे छेशिष्ड्ड इहेग्रा डाङ्गिक थक थानि পত্ৰ অৰ্পণ করিয়া বলিলেন যে তাহার ভাতা সৰ্দার मिकन्मात था। ७३ পত ও ছই জন লোককে ভাহার নিকট প্রেরণ করিয়াছেন এবং ভাহাকে লিখিয়াছেন य जागिदतत निक छे इशिमिगदक शिति छत्र कतिया मिय।। আমির পত্ত পড়িয়া জিজাসা করিলেন যে তাহারা কোথায়? আবহুলা জান বলিলেন যে তাহারা প্রধান স্থান জারমেনেরা হস্তগত করিয়াছে এবং इशिरत मां जारहन। जार्मित प्रिंट जा लाक वलिया (वाश इय। आभित जाइपिनादक তাহার নিকট আনিতে অনুমতি করিলেন। ভাহারা व्यागित्तत मगीत्य छेथाञ्च इहेल्लन। इहाता हुई जन क्रिशा क्रिश भवर्गिय कर्ज्क आगिरतत निकरे প্রেরিত হইয়াছেন। তাহাদিগের সক্ত কথাবার্তা विलया जागित जाशामिगटक विमाय कतिया मिटलन धवः वाव इहा जान क विलिलन य डाई। पिशिक डिनि शोशित लाइ। निकं त्राधिया (मन। षाद्यायानदक्उ

निरम्भ कित्रा (पन स्य इश् श्रकः भ ना इरा। व्यावात हे ल ७ त क दिन मिद्धि वि ल ७ ए। वित मदम मन्श जि ल् ए (निश्यादात भश्र आमिशा मस्दम जर्क विज्कं इया लएं निश्यात ভাবিকে বলেন যে ইংরাজেরা ক্সিয়দিগের সঙ্গে ७३ तथ मिक्न कित्रिया एइन स्य आक्रशादनत्र निक्वातिङ मीगा डेल घ९न कर्तित्व ना। मिस्ति लिथिङ এই विषश्रि तका कतिए इहेल जागितत छे भत याहार हैं। अ त्रांजि पिरिंत व्यांषिशंजा थां कि এই क्रिशं किंगा छें थां त कता छे ि ७ वर थक वात यि इश्ता (क्रता) कतां यद्व व्यानिट शाद्यन ভार् আমিরকে इहेटल व्यक्तिश् कार्यल इंश्ताकाश्विक् इहेट्य। लर्फ जिथि अहे शिखादि ममा इस्न नाई। जाई। विद्यानाश जाकगान अधिकारतत कान जा उपार्श कतिरल ভाর उरर्धत जाति विष्न इहेवात मञ्जावना।

इंडेटबाटिश युटकाब जार्श्का

व्यावात इंडे द्वाश ऐलामल क्रिट्ड । ममताश्चि शिंख्ज लिंख इहेवात ममूमाय शूर्वलक्षन लिक्ड इहेटड ছে। প্রশিয়ানরা বিজয়ী হইয়া অহংকারে স্ফীত হইয়া छेक्टिज्ड व्यवः निर्गाज्ज कारभात প্राज्जि याविषक व्यथमनभू ठक वाका প্রয়োগ করিভেছে। বিদ্যাক श्रीमग्रात शंक्षे ताष्ट्रा এवर जिनि नडकात व्यव-कर्यन किल्या निया न्य को का अभियानियान खेशदमभा मिटल्ट्इन (य क् । ट्यांत वटक माश्याजिक क्राट्म काखाशांक कतिद्व ना भातिद्व जाशांत्र मझल नाई। जिन काभ्यक युष्क थावल क्राहिवात जिथिन नाना छेशांत्र व्यवनद्म कतिएएहन। छोहांत स्य क रिमात अथन शब्न प्रभा, क र भादक यारभगरमं युद्धा य्याद्या थादयमं कत्राहेदज भातिरन

जाराक जत्मत गज थक्ष रहेगा थाकिए रहेर् । किख ठकन छेउछालानिङ 'एएडिन्यान' क्यानी जां जि जा कर्या क्राटिश शिक्षा बिक्षा क्रिया क्रिया क्रिया है। ভাগারা বিসমাকের অপমানস চক বাকোর প্রতি कर्नभाज कतिराज्य ना वारः वाजि ना ना नक-লের সাহত সখ্যতা স্থাপন করিবার যত্ন করিতেছে। কিন্তু বাহিরে ফাজ যতই শান্তভার দেখান অন্তরে যে তাহাকে শত শত বিষময় সর্পা দংশান করিতেছে তাহা অনুভব করা যাইতে পারে। ফরাদী জাতি ध याव जगर जत ता जा हिल्लन। मम इडेरता थ তাহার করস্থ ছিল। যে জার্ম্যানেরা তাহাদিগকে व्यथमञ्च करिय़ाट्ड जार्शिमगटक जार्शना वर्ष मजा বলিয়া ঘণা করিয়াছেন, স্মতরাং ফাশ্স আপানার इत्रवश (निथिया कथन है निक्ठिख थाकिए शाद्रन ना। धरे निमिछ क् निम्म जमामाना याजूत महिल रिमनिक श्रेक्षिमित्रां कि युक्त भिक्ता (म अया इहेट एट । वर **धरे निशिख (म मिवम (विजिनित किनित हरेग्र) हेरारे** मावाख इहेल (य विजिन यि विश्वामयां जक्जा कतिया वाचा ममर्थन ना कतिएवन छाशा इहेल छात्रप्रत्रा कथन हे का न्मरक धक्र । इंडगान कतिए भाति । ना। विष्णगण्डः जामल्यम उल्लिखन क निरमत द्वि छेश ऐकांत कतिवांत निमिष्ट कानम य अक वांत काश्रमत्नावादका यञ्च कतिदवन जाहाद जातं मत्नाह नाई। তবে বোধ হয় বিসমার্ক ষত শীদ্র যুদ্ধে প্রবর্ত रहेट ठाहिट इत का ज ज जी ख जारात जाज-প্রায় পূর্ণ হইতে দিতেছেন না। ফ্রান্স আপনার বল উত্যরপে পরীক্ষা না কয়িয়া আর যুদ্ধে প্রেক कतिदव ना। विममार्क का एमत रिश्यां एक हि क छे क ति श्रा १ विष्ठ । जिन विलि जिल । क । ज जर्भ धनी जवर ज जी ख शिमियात अन (जान कतिरव ज्ञानिए शांतिरल क् निकं हे इहेर ज এত অর্থ লইতেন যে তাহাকে আর কখন ভাহা পরি-শোধ করিতে হইত না। ফান্দের তিন ভাগের এক ভাগ गांज স্থানে জারম্যান দৈন্য প্রবেশ করে। किन्तु विमगोर्क इंश् इं विलिश इंश्थ প্राकाभ क्रिएएहन य (कन जिनि मथछ क्।क जात्रग्रान मिना बाता लूर्थन कर्नान नाई? जांश इहेटल जांत कानतमत कथन ऐकि . ज इडेज ना । विममाक कारमात वाना भक्तिगक्उ छेरमाइ मिट्ड किर्न-তেছেন ना। ইটালির রাজাকে তিনি এই রূপ প্রা-यर्भ (नन (य कतामीता जाहात ताजा हहेटज नाहम अ माां इस को ডिय़। लहेश हि, वाज वव जिन छेहा ऐकात করিবার চেষ্টা কৰুন এবং প্রাসিয়ানরা ভাহাকে माश्या कतिद्व। (मोडांगा कृत्य डाश्रत श्राद्यांश वादका इंद्रोलित तांका कर्न भांक कदतन नांहे।

विमगादक त প्रकाभा जाव (मिश्रा) इंदेरता-পের অন্যান্য জাতি চমকিয়া গিয়াছেন। ইংজে দের পারলিয়ামেণ্টে ইউরোপের ভবিষাৎ যুদ্ধ সমমে म मिनम एक निजक इस। जोशाउ त्याध इस हैश्दत्र क्या वाभाशका क्रिट जिन स्व हुई । जिन वर्मदत्तत यः श मयूनाय इडेद्राद्य मयताश ज्ञाल्या छेक्टिय। देश्दत्र जित्र । व यूट्य श्राद्या ना क्रिल भारतन, किञ्च इंछे तार्थ युक्त इहेल्लई इंश्ट्तक (नत विद्याय याजि वृद्धि व्यादह। विश्व का व्यादह। विश्व युक्त ना इहेटल हेश्ट्र अपिशादक किमियात निकृते अञ वाश्यानिक इहेटक इंडेक ना । क्रांभटक किमिया हित्रकाल ज्य कर्त्व धवश कांभ जोविज थाकिएल किमिया कथन क्रक मागदत श्रेनताय मगत लाइ जागाइटज शांतिरजन ना। आवात युक्त आवस इहिल कुछिया उक्क व्यक्तित क्रिड शाद्य ध्वर जोहा

इहेटल हेश्टब्राङ्ग एक ख्टा मना मका ना मना कि । ভাহাই ঘটিবে অর্থাৎ ভারতবর্ঘ লইয়া কসিয়ার महिं छोना छोनि कतिए इहेर्व।

भारीतिक वटलत প্রয়োজনতা বিষয়ে विख्त जक विजक इहें शा शिशाट । अथन आत अ विश्व पूरे गड नारे। जड्य भीख २ गाहाएड ल्लाक्त मा-शैतिक वरलित श्रीं जिम्सि शर्फ मकरलित मित्रश कता कर्डवा। इः श्वर्श विषय (पर्भात यह वा अत्रा नाई शाहादम्त এই এक गांज छेटम्मा इहेटव। नव-भाषान वावत वर्ष नामानान सामाईण इहेशारह वर्ष, किञ्च धरे मलांद कीका नारे उध मलांत विख्त काज। । जिन्न गांशाद्य वाण्याद्य वाण्याद्य अगः इटमत दिन इस धरे निर्मिख धक्री श्रक मड़ा कर्डवा, नजूवा नारिणन ल मामाईणित वह विच्छ य-ज्ख भाशा कर्ता कर्ज्या। जानाशा विलिद्यम डिग्राहमः धक्रश धकि नाथा जाट किंख जागादम् विद्योगार শুরা বাহু বলের উন্নতির নিমিত্ত একটি সভা করিলে यं का क इहेशांत मंख्य, नार्यां नाल (मामाइन या-श्र डिप्मणा वर्षिय जाश जाता जरूल इरेगात मस्त नशा धक्रिंग धक्रिंग म्हा इहेटल इहेटव ना होकाइ 3 श्रांजन इइति. किन्तु वाश इश् ए डिल्मिला किन् होका भा उद्या माइट भारत। हाकात लाक जनित প্রস্তুত করিতেছেন, ভাঁহারা টিকিট বিক্রেয় করিয়া জা वात ७३ जनगित्रगन्दक श्राजिशानन कतिद्वन । ५ এक क्रिश मन्त नय, किन्नु ভাহার। মুখোয়ে ও যোষকে ডন-शित यक मिन ना कतिएक शास्त्रन एक मिन श्राह्म छेएल्ट्लात माथन इहेटव ना। मायाना ल्लाटकत मद्या भारीतिक वरलत छे एक छर्ग छन वर्ग वास करिएल इस, यूर्थारमा कि रचार्याक ज कियर छे नाशी कतिरं व्यर्थ ছाए। वात किছू ठाई। यपि नए। इटलत वीत वाई छत्रने वांबूदक मना ज्ञात्म ज्ञिश धकि छे गावि उ यात एटव मखवं जात मना ही ताई हतन वातू शहुं इइटि शादत। किन्तु ध मगूना स कदत (क, व्यागि कि जुशि किंदिल इहेरव ना। मन जन ठाही वामनात विमाल स छ ल मसूमारा जामादम् इ । जादह, षा विध्व मकल (इंड माखी तगर गत डिडिंड (म डिग्डा-शामित य य य क ला भा भी तिक वल्ल त । ए । निविध धक धक नि वज ज्ञा श्रीन करतन, अ जास्त्रा अश् ध मगूमां विषय ज्ञावशायन करतन उ छे श्रा क शाब गर्गटक शूतकात (मन। यमि कूल्नत गरि। तत त्व मन्ना छे गाँख इहेशा थारक एटक ছाजार त निएक উদ্যোগী इड्डा भारीतिक वालत छर्छ। करा छिछ्छ, कतिन वागादमत रम क्रिन इफिना अग्र ज्वार निन वाक् वरलत थां जनगा ी जिन जात्वत यून्ब, वात मकल्ल कूर्वा वाशादात वथन वकतित श्राम জन उ मिरि राक्तल। প্রভাক জিমিদারের কর্ত্তর रिव जिनि जार्शन श्रीकाशार्गत मरशा नरमत नरमत श्राक्षांत्र विख्रंगं करत्न अ खरा है। विश्व आकिया প্रशास प्रमा शामक लाटकत कर्ड्या ए जम स्थि मन्गरित मगर कामा गानित, उ ७० जान्यिन जात्य, य कु खित नियम शूर्क किल उ अथन उ कथक इ जारन वाः एक जाकात श्रमकातीशक कर्तन। छ गन्। भा लाशक व न छेक (लथकिमिर शंत कर्वा आशीतक वल उ गाइर मत श्राजनजा न्य कित्रा (प्रश्रेश (प्रग्राच्या प्रमाप्त प्रतिन । महाम भटाउँ मुक्तामकश्च मक्ति । जिल्ल भारतम । भारतम भारतमात - कहे आया छहि हरे ख्या. ल्लाटक इरेकि बााख भिनकांत्र करतन, छि दकान नर-वाम शख डाहात डेट्सथकतिटलम मा। मकः सम्बद्ध लाभ द्वा डिडिड (य इस्कृष्यद्वा (य कान वीत् ज्व कार्य इस उम्राय जार्य मश्याम भारत थाकाम क्रिया लाग

CALCUTTA-THURSDAY 11th June 1874.

The following curious advertisement appeared

in the Native Public opinion: -"CHALLA NARAYANSWAMI, an Under-Graduate of the Madras University, and the Factory School Master, Aska, respectfully begs to inform the Public that he is one of the best singers that the world has ever heard He can sing Arabian Nights' Entertainments, Chardarvish, &c., &c., &c., in the most pleasant manner in English and Telugu. To convince the Public more that he is a very great singer, he informs them that he defeated already the celebrated singer of the Vizagapatam District, Madhavaram Pantulu. None but those who are able to bestow upon him a prize of one hundred pounds sterling and travelling expenses, need apply to the above advertised.

Who is the Editor of the Catalogue of books that appear in the Calcutta Gazette? Is it you Mr. Robinson? Whoever he be, he does not shew an enviable knowl dge in Bengallee literature. Now see how the learned Editor describes the works that have been published during the quarter ending 31st March.

Mahabharat A Historical Romance.

Brihat Lanka Kanda Fiction. Radha Krishna Bilas Fiction.

Religious Romance. Ramayan

neligion. Sha itiporba

Sreemat Bhagabat Poetry. Ajodhya Kanda Poetry.

We make some selections at random. May we inquire why Mahabharut should be a historical and Ramayan a religious romance? If the subject of the Sreemat Bhaghut be poetry, that of the Bible must be prose.

We have to record today the death of a distinguished native of India, that of Dr. Bhau Daji of Bombay. What Rajendra Lala is to us Bhau Daji was to Bombay. He was the first physician of Western India, a most clever antiquarian and a leader of public opinion. A full description of his literary occupation is given by the Native Opinion, we regret we can not make room for it. If possible we shall try to do it in our next. He leaves a very valuable library behind composed of rare sanscrit and other works.

Raja Runa Nath Thakoor has been dubbed a C. S. I. Honors have been heaped upon this old gentleman fast enough, but not so fast as he deserves. Patriotic at the same time in good terms with the powers that he, extremely old yet vigorous and energetic, coming from an aristocratic family yet meek as vaishnab, simple, un'ostentatious, polite, there is not a better man in the whole country. We only wish him long life, not that he may enjoy his honors but that he may do good to his country by his vast experieuce, eminent position and his influence over the ruling race. Men like Raja Roma Nath serve to keep the two races united, the conquered and the conquerors together. We also see that the title of Raja Bahadoor has been confered on Coomar Horendra Krishna. The son of a Raja Bahadoor he has no doubt a claim to the title, but the most deserving in the family is Raja Kumal Krishna.

The Ajijan Nehar, a paper conducted by Mahamedans in chaste Bengallee notices a case which has created a great deal of interest. A certain European famine Officer assaulted two constables and the constables brought the matter to the notice of the Sub-Inspector who directed them to lay their case before the proper court. The European Officer upon this sent for the Sub-Inspector, abused him and threatened to report against him. The Sub-Inspector defi d him and the Shaheh fell upon the Police Officer, broke two of his teeth and severely malireated him. The Sub-Inspector recovered his lost ground and caught the Shaheb in his embrace. Others came and parted the heroes. Both of them then flew towards the capital town, but the famine onicer, coming by a steamer engaged for famine duties came before, and took care to poison the minds of both the District Police Superintendent and the Migistrate. On his arrival the Police officer was required to furnish a security for 1000 Rs. and committed to Sessions. The case of the Police officer was dismissed on the ground that the European assaulted the Police in self-descuce.

The Statesman gives account of a case which appeared in these columns some time ago: "On last Christmas day, the men of the 18th Hussars appears to have been having a seasonable merry making. An abundance of liquor of all

descriptions seems to have been in circulation in the barrack bungalows, and a good number of the men had certainly reached a stage of excitement hy the afternoon of December 25th. During the day, one of the Hussars named Young gave a native a rupee to bring him some beer, and the man brought neither beer nor money. So Young sallied out in quest of his messenger, whether accompanied or not is doubtful; for his condition was unfavorable to his recollection of anything that transpired after he left his barrack room. Towards evening, word was brought to the Hussars that their comrade Young was lying insensible and covered with blood in a ravine near the Dhobies' village not far from the Hussars' Barracks. Clearly, he had been set upon and severely handled by the natives, and while some of his fellow-soldiers went and carried him in and attended to his needs, others inflamed with their day's quotations and naturally exasperated at the ill-treatment of their comrade, proceeded to the probable locality from whence Young had been assailed bent as seems evident, upon vengeance. At least two swords were taken out of the barracks by some of the Hussars, and a native man and woman lost ther lives on the occasion by wounds likely to have been infleted by swords. Others were assaulted, the marks left being such as the dull edge of a sword, or the back of its blade would inflict, though not so broad as they would be had an ordinary walking stick been used.

Some men of the 18th Hassars confessed their guilt, the confession was first admitted by the court and then rejected on the ground that they were coerced by the Police. The prisoners were acquitted on the ground that they could not be identified. Just fancy British Soldiers coerced

by the Police!

If the famine has increased our debt by half a million per annum, it benefitted a large body of Europeans specially the Indigo planters. The indigo planters of Tirhoot to whom the present famine may ve partly attributed have reaped a golden harvest. But the planters of other parts of Bengal were not idle all the time, they did all they could to share in the general feast. The wretched circumstance of the indigo ryots has been taken advantage of and advances forced upon them. At a time of great distress people do not much care to look at after consequences, for a rupee in hand they care not to sell their soul and body for ever. Numberless ryots have been within the last two months secured by some of the indigo planters, secured in adamantine chains. The contracts entered into by the ryots shew that they were not free agents, when they agreed to the terms, they are so one-sided being only advantageous to the stronger party. Thus ryots have agreed to sow for a term of 5 to 12 years and to sell to the planters indigo at 4 bundles a rupee, while last year the rate was two bundles. According to the terms of the contracts the planters will have power to seize the cattle of the ryot if it is found tresspassing on his own indigo land! This condition in the contract clearly shews that indigo is not profitable to them, that they do not care if the plants are devoured by their cattle and that when they entered into contract it was not the idea of profit which led them to do it, but that there was some pressure exercised upon them. It is a disgrace that indigo which is not profitable to the ryots and is not therefore freely and voluntarily grown by them should continue to flourish in such advanced districts as Jessore and Nuddea.

While on this subject we cannot resist the temptation of relating here an occurance which took place in Jessore sometime ago. A Mr. Clarke an judigo planter of Jessore was assaulted by his coolies and the coolies were punished and incarcerated for a term of six months. The case was decided by the Deputy Magistrate of Magoora Mr. Deare, a bald-headed and fat-bellied gentleman, who very much looks like an Eurasian but who denies being one. We noticed the facts in our columns. The Magistrate Mr. Smith, one of the ablest Magistrates in India, got scent of the case, sent for the record and found to his astonishment that it was Mr. Clarke who previously assaulted the coolies, and the coolies being provoked then fell upon Mr. Clarke. Mr. Clarke was acquitted by Mr. Deare but Mr. Smith fined him in the sum of 16 Rupecs. The punishment was light but the offence was light also being one of simple assault. But if the offence of Mr. Clarke was light that of the coolies was lighter because they assaulted on provocation. The coolies however were dealt with the utmost rigor. Mr. Smith was no doubt satisfied with the sentence he passed but Mr. Clarke was not. He filed an English petition to Judge Mr. Lawford for the case was not appealable, and filed along with the petition a copy of the Patrika which contained the notice of the case.

Now it happened that when we noticed the case we said some good things of Mr. Smith and Mr. Clarke mainly depended upon this fact for the remission of his fine. He also partly depended upon the affectionate feeling which Mr. Lawford entertains for this paper as the nature of the feeling is well known and was probably known to Mr. Clarke. He argued at length that the Putrika is a rascally paper which noticed the case and this was his plea number one. His second plea was that there were good things spoken of Mr. Smith in that notice and Mr. Smith was "so elated" by the praise that he fined him. Upon these two important grounds, Mr. Clarke prayed for the remission of the fine. Mr. Lawford nowever rejected the petition and added the remark that Mr. Clarke should have not spoken so disrespectfully of the Magistrate. There the matter ended, and we do not know what further steps Mr. Clarke purposes to take.

Mr. Smith it appears has not magnanimously chosen to take any notice of the contempt of court which Mr. Clarke undoubtedly committed, but was Mr. Lawford guided by the same noble feeling? The petition was submitted to him and it was his clear duty to preserve the dignity of the court and not let off such insolence by a

mild sermon.

Babu Boroda Nath Haldar, the Head master of the Normal school at Gowalpara has resigned his post under the usual circumstance; i. e he came in collision with a shaheb. Mr. Harvey, a lower Telegraph Officer, whether a European or Eurasian we do not know, has a peon, and that peon is of course very proud of his own position. So he naturally quarrelled with the Normal school boys for school boys generally are as quarrelsome as the peons of shahebs. The peon, feeling himself incapable of coping with so many, sought the assistance of his master, and the master well versed in the politics which the British India Government has all along faithfully pursued, of supporting its servants at whatever cost, accompanied the peon to chastise the boys. The masters intervened and Mr. Harvey, whose blood possibly always circulates very rapidly in his veins, anused the Teachers and boys. The Head master interposed and told him to hold his tongue. The case was as usual referred to the District Committee, the European members as usual transferred the Head master, the native members as usual opposed and Baou Boroda Nath Haldar as usual resigned.

The following ably and humorously written account of a case appeared in the Bombay Times and we make no apology in reproducing it in extenso as it will amply repay perusal.

On a sultry day in October last, a solitary horseman might have been seen by Mr GP. R. James, or indeed by anybody else who was near the spot, proceeding along the high road in Rajcote. The traveller was not thinking of anything in particular, and he paid no attention to a peon who might have been observed, by a more vigilant equestrian, washing his teeth at an old disused well by the roadside. The man on the horse and the man at the well were both unconscious that destiny meant to bring them in contact, and the former moved harmlessly and heedlessly past the latter. The horseman had not got very far, however, when he awoke to the consciousness of two things—that the peon whom he had passed had a bare back and that he himself held in his hand a magnificent horse whip. The conclusion was suggested by Fate—the back and the horsewhip were made for each other. He wheeled round, and gallopping to the back, laid on it the whip, which never before had been used on anything nobler than the hide of a horse. Four times it descended on the peon's person, and each time it. left as a witness of its temper a splendid weal at least a foot long. This duty performed in golden silence—the solitary horseman never opened his lips during the whole transaction-Mr. Aston, the Rajcote Magistrate-for that was his name and station-rode on, rejoicing in having deserved well of his country and his God, to which and to Whom men who weakly humour natives and their prejudices are, as we all know very properly accounted Traitors.

Now, it never occurred to Mr. Aston that the individual whom he had horsewhipped was named Janki. Even if he had known it the difference might not have been much, unless he had been given to the consideration of abstruse semi-metaphysical distinctions. But if he were of a philosophical nature, he might have paused at the reflection that this particular peon was a personality-whose name was Janki, who as such had rights, and might, by possibility, be disposed to ask why those rights were disregarded on this particular day? And then Mr. Aston, while pausing at this thought, might have let his horse-whip drop from his handwhen memory, coming to his aid, reminded him of the consequences which have followed blows struck with "a light heart," from the day when Moses struck the rock to our own. Tring, Wing,

and Ivanhoe, were lost for striking of a blow. A coup d'eventail changed Algiers from a den of pirates into a French province. The blows rained down by Mr. Aston transformed a peon into a Principle.

The Outraged Law, in the person of Janki, presented itself for three whole days at the door of Mr. Peile's Kutchery, and asked for admittance as a preliminary to demanding justice. Mr. Peile had no notion of giving either on compulsion, but the pertinacious Janki presented himself a fourth day, and though he could not get admittance, and was denied justice, he succeeded in extracting from the Political Agent the following mystic words, which were evidently expected to act as a charm and make Janki happy for ever after: - "The petitioner to be informed, the Station Magistrate states that you were cleaning your teeth in the well or on it. You should be careful not to spoil the water which Shaheb loquoes and others drink, then you will not be beaten again." The charm failed to work. Janki did not happen to have in his possession the copy of any Code of Laws known to mankind which would subject him legally to corporal punishment, without trial, for washing his teeth; and besides he looked upon the statement volunteered by Mr. Peile, that he had performed his toillette on the Saheb loques's water as in itself an injury and an insult, inasmuch as it was not true. He therefore requested to be favoured with a certified copy of Mr. Peile's "judgment" and formally tendered the proper fees, so lear to the official soul. This was the beginning of trouble to Mr. Peile. The Political's judgment was not his strong point. It was no wonder that he refused to give it. But Janki was inexorable; the four weals on his bare back urged him to revenge; his pound of flesh-justice-he was determined to have and as he could not get it in Kattywar, he resolved to seek it in Bombay.

To the Bombay Government Janki appealed, forwarding to His Excellency the Governor in Council through Colonei Walker, a statement of the factand a copy of Mr. Peile's "judgment.' For seven mortal months the august mind of His Excellency, aided by the practised intellects of all his advisers, has had the facts and surrounding circumstances of this most intricate case under its most serious con-Sideration. The matters involved in it were, it must be admitted a little obscure. Has a Magistrate a right to horsewhip a man for cleaning his teeth in a way not sanctioned in Handbooks of the Toilette? Is a peon a man? Has he rights and immunities that a Magistrate in the Mofussil is bound to respect? The claim of a free-born citizen to wallop his own nigger has been sometimes admitted as a matter of course and sometimes very emphatically denied; clearly the question becomes complicated past all making out when the nigger walloped is neither your own nor anybody else's. Is Mr. Peile such a pillar of the State that to cast any doubt upon his judgment might bring the British Empire in India to an untimely end? Mr. Aston himself; has he got good friends whom it would be a sin to offend? Is he a jolly good fellow upon whom the utmost reliance could be placed whenever his evil stars did not bring about the conjunction of a brand new whip, a bare back, a disused well, and a lonely road? All these matters had to be weighed in the nicest of scales, and seven months were not a week too long to get at a satisfactory or safe result. Fourteen years, according to Faraday, have to be given up to the establishment of any new discovery in chemistry. Seven months have sufficed the Bombay Government to to establish this astounding truth—that Mr. Aston was wrong in thrashing Janki, and that Janki was served right in being thrashed by Mr. Aston.

its own words :-"The petitioner should be informed that Government have signified their displeasure to Mr. Aston, and do not consider the petitioner is entitled to further redress." This oracular sentence constitutes the 3rd paragraph of a State Paper which is dated the 9th May. They "do not consider that the petitioner is entitled to further redress?" What redress then has Janki got? None at all, unless we are to assume that he is a peon of such a spiteful turn of mind that he will be consoled for his scored back by the reflection that the Sircar is "displeased" with Mr. Aston. But so improper a gratification of the worst feelings of his nature supposing he has got them-should not be called redress. To us it would have occurred that the only questions involved were-Did A commit an aggravated and unprovoked assault on B? Did C refuse B justice out of regard for A? If A did assault B there were three courses open by law and custom, (1) to imprison A, or (2) to fine him, or (3) to make him give B proper compensation. The Government dexterously avoids following either of these three courses. As for the question which affects C-Did he refuse B justice out of regard to A?—in case of the answer being in the affirmative, only one possible course was open if the Government determined to do their duty and let the skies fall-to give him a wigging. But from that course likewise they shrank. In the whole of this tragi-comedy, which makes it difficult to know whether a well wisher of his country and of the Government ought to laugh or to cry, there is but one thing that is satisfactory—and that is, the stubborn persistence with which Janki asserted his claim to his legal rights. It is a good sign when unknown Mofussil peons rise to the level of

Allow the Government to formulate this theorem in

principles. Mr. Aston has doubtless sold his horsewhip; he never will flog another peon with it.

ENGLISH POLICY IN THE EAST--If Ireland had been governed as India is governed now the Irish could have never given so much trouble to the English, such is the sentiment of a book on Ireland published only the other day. The writer tries to prove that England always tried to raise the Irish in the scale of nations and the consequence was, the more generously the Irish were treated, the more ungratefully they acted towards England. They prayed for the redress of their grievance and their grievances were redressed; they prayed for more privileges which were granted, but the more the English yielded the greater became the demand of the ungrateful race. Wise in their experience of Ireland the British Statesmen will never commit the mistake in India which they committed in Ireland. Whatever philanthropists and good natured men might say, the sentiments of the present race of British Statemen are not much different from that what has been described by the author alluded to above. They will not encourage us to be clamorous by yielding to our clamors, they will not redress our grievances lest we increase. in our demands. In other words British Statem n have learnt by their exp rience of Ireland, that the best way of keeping a conquered country quiet is by keeping it continually under the thumb. The least relaxation is impolitic as it gives some advantage to the fallen which may never be recovered. If this be the real policy which England always means to observe in India, we can understand many acts of Government which before appeared to us as so many mysteries. We always believed that the new Criminal Procedure Code did not suit India because the people are a quiet set, and did not require stringent laws, but now we see that if the Code did not suit India, it suited the views of those Statesmen wise in their experience of Ireland. We now clearly see why the prestige of the Executive, from the Magistrate down to the constable, is always jealously guarded, why natives are jealously excluded from the higher posts of the Department, why men are put into Jail on the slightest occasion, and subjected to a thorough discipline; and why the well meaning clamorous Babus are so much disliked. In short the best way of keeping India quiet according to these experienced statesmen is to convert whole India into a Jail and the Babus into short term prisoners, subjecting the inmates to a thorough and rigorous discipline.

One strong idea influences the policy that is to be adopted in India, one idea, and that is that India must be retained at whatever cost, and not for a century or two but for ever and ever. So British Statesmen do not choose to relax the least hold upon us; so many there are who lament that they gave English education to the natives of India; so Lord Mayo said that England meant to retain India for ever and ever, and so by a series of politic measures the interests of both the people of England and India have been so blended together that the disseverance of the connexion of the two countries will injure the interests of both. English capitalists have been induced to lay out their capital in India, memchants have found a mart for their commodity in India and if India were to slip from the hands of England, both the merchants and capitalists would be ruined and the loss to England would be immense beyond calculation. On the other hand the Princes of India owe their present dominions to the suffrages of the English, the Zemindars owe their patta to the English, Indian Capitalists from the prorest who takes the help of the savings bank, up to the millionaire, have entrusted the British India Government with their money, and if the English were to leave India today all these would find themselves in a very uncomfortable position. The counexion between the two nations is disseverable and like that of the Siamese twins past remedy. But England to make things still more sure, guards with a jealous eye all the movements of the people from the Sovereign Princes down to the prorest wahabee. The Princes are guarded by Residents and spies, and the people by the Police and Magistrates. Native Newspapers are encouraged to a certain extent only that the innermost secrets of native society might ooze out through it; a vague law is enacted to suppress seditions speeches &c, the new Code allows the police power to disperse any assembly; indeed all that a shrewd and extremely vigilant people would do under the circums:ance has been done. From the measures, many of them undoubtedly superfluous, adopted by Government to retain India, it would appear that the English though quite confident of their prowess is yet as if constantly afraid of losing India. One of the most potent means of

render: -- he people weak, adopted by politicians is by keeping the people aloof from each other. Divide and rule is a highly approved policy and it has been successfully carried out in this country. The Princes have been pitted against the Princes, Parsees against Mahamudans, Mahamudans against Hindoos, Eurasians against natives, Hindoostanees against Bengallees. subjects against their Sovereign Princes, and ryots against their Zemindars; and so successfully has this policy been carried out that there are intelligent men amongst us who have been deluded to render their help to favor it. But above all the whole nation has been disarmed and those who would fight cannot fight with swords against a people who deal in all the latest improvements in scientific warfare.

Thus there are two policies that have been adopted by British Statesmen to retain India, one is to disable the people for ever by disarming them, another to demoralize them by keeping them constantly under the thumb. The Indian Daily News in its Saturday issue very lucidly sets forth the last named policy. It says:

"It s astonishing that so few persons should possess sufficient insight to perceive that any description of foreign government will be simply impracticable in India, when once its people are really capable of understanding and exercising the privileges of free men, and that so long as English rule survives in this country, it must perforce continue to be essentially despotic. There may be ways of manufacturing ready-made civilised nations, which are unknown tostudents of history; but if past analogies are to be of any use in moulding Policy in India, the English occupation of India is wholly incompatible with that stage of progress in education which the Government has hitherto simulated in this country. It is frequently remarked that, if this country were a tabula rasa, and the Government had to recommence its work among the people, it would act wisely in delaying the consummation of the reign of law, and in letting high education await its creation at the hands of a regenerated people; but that having gone so far with law and education, the Government cannot now retrace its footsteps. Arguments of this description ignore the laws which govern the world and which avenge themselves on Governments that disregard them. There can, it seems to us, be but one way of working out any great political problem; and while, on the one hand, we fear that persistence in an erroneous course almost invariably involves some ugly retribution, on the other, the result of such persistence, even if there be no grand break-down and a compulsory retracing of a wrong cause, can at best be but a permanent compromise with evil, from which any highly satisfactory fruits are not to be expeded."

So freedom of the people is incompatible with the possession of the country by English men. And because a thorough intellectual culture makes a man aspire after freedom the people must not receive a thorough culture. The Indian Daily News therefore proposes "the creation of a large number of executive offices presided over by Englishmen or Eurasians." He advocates also mass education for "a little reading and writing would harm no one and they might actually prove of some use." We said that one paramount consideration sways the feelings and sentiments of British Statesmen, and that consideration is that India must be for ever retained and every other consideration succumbs to it. They cannot afford to think whether this measure or that is just or unjust, calculated to do good or to injure India; their first consideration is whether it will help in any way in carrying out their one idea. If the measure can stand that test, then other considerations are brought into requisition. We said some time ago that any high morality in a nation of conquerors is out of the question and the Indian Daily News and the Indian Mirror did not at all like our sentiments but see where a thirst after loot leads a nation to. Murder is a great sin and a conqueror must necessarily first of all spill an ocean of innocent blood and ruin hundreds of thousands of men. But here his sin does not end but commences. He !ries to emasculate a nation that it may never grow physically, intellectually and morally. He murders a nation by a process of slow and painful death. He encourages the people to fall a gradual fall, he discourages any attempts after progress and that sometimes by incarceration and death. Ladeed he turns a demon as describ d in Christian mythology. What penan :e can obliterate such a stain? Can the abolition of the slave trade from the marts of Zanziber wash away such a sin: The Irish rebelled against the English and the consequence is that India is made to suffer. God Almighty help India for she is past the help of her own children!

र आज काल कितिकिपित्रात वर्ष वीष्टिति। (छिलिन्छिन मन्त्र) पक कार्य कार्य कार्य कार्यकार्य काशक इरेशा में डारेशाइ। এक क्षेत्र वहने देश कि काल शार्व जारावा देशतक निगारक जार है । सिंह न व्याङ्ख्य वर्षे मगरस भारर्गरम् । जार्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष विद्यान कहा कर्ट्या। कृत कि तिलिकात व (मटल व्यवश्वा कृत्वन तक रगत । भारतिम् भारति विक्रिश वाम करतन उथन डांश्रा ड शामत माना कि नियम खिलि পরিত্য গ বরেন না। তাঁহারা অন্য জাতির সঙ্গে जाशादित लोगिन गिर्णिन करत्व गा, सुन्द्रीर जो श्वा छेल्य आर्डन उ कर्य कर्य कर्य छेन्न इहेर इर्ड इन, किन् कि विभिन्न । ध दम्दल न नि दलादकत अद्भ निम्ना क्टियरे रेन मन्ना প्राप्त ररेज्ड मा मगाज मः कातक इश्राह्म । अहे जक छेना इत्रंग द्वारा कि कू ख्वार लाख क्रिटिक शाद्यम । এथन এই क्रिक्रिक्रिक्रिक्रिक्रिक्र थ, ना कदत्रन, धारानी सता घुना कदत्रन, धारम कि दमनोग्र थ । स्टेशात्न ता भात ज शदक जारादम महिज शिब्धिए कोन ना। कि इंश्ताएक श्राधाक करिएन छ कितिकितिरात इंश्ताक व, बी ब वात छेशार नाई। हेश्रां जग्ने अत्न मत्न जात्न जात्न एक जिल्ली स्थान कि ति जा जिल ज ति श श म करत (य मृत हि। हे क तिलि उ च राहार मत जात कि। था स हितात (रा नाई। यूगल्यानिंद्रात महिं जायापति जाजी-युष्टा इस क्रा थार्थनीय उ इस मसुत शत, किन्छ यितिक मिरशत मिरशत माइज वामाएनत वा जीयजा कि প্রার্থনীয় ও সম্ভবপর? ফিরিজির দিগের সংখ্যা धा क्य (य जोश्राता श्रथकत्रात्य (य एक जाजि क्रबन जाश क्रेट शांद्रन ना, जिह त्यानीत महिज णिशिद्वि विशिद्वि इहेर्त, ज्या कि कि जिल्ला कि लडेएड ठांट्ड ना। डाइाएनत काट्य कट्य क्या श्रीन प्रभा इहेट जिल्ला जो हो एक धार्म कि जूना करिताल अ ज'-श्रापत ज ल इहरत ना। जामारान विराहनाय जाहा-(एत ल्लानिएडत महिङ এখন मएङङ उ श्रीक्रिक ङ ल्यानि जिम्मा हेट था तिल्ल जाइ ता छ कात इहेट ज शांद्रन। जाशांद्रत व्यक्ति लियाय या अया वर्षता, तन-খানে লোকের অভাব, তাহারা আদরের সহিত श्री इहरवन। जारके लिया थूव निकरि, जमन कि छोश्ता (७ छ। कर्रा य जिल्ला वित्य (महे मत्रकार्त्रत वार्य रम रमर्भ याइट भारतन।

আমরা গোয়ালপাড়া হিত সাধিনী নাম চ এক খানি পতিকা প্রাপ্ত হইয়াছি। তামরা ভর্মা করি এখানি দীর্ঘজীবী হইয়া দেশের মঙ্গল সাধন করিবে।

আমরা কোট ফিস্ সংক্রান্ত এক খানি পত্র স্থানান্তরে প্রকাশ করিলাম। উহা দ্বারা স্পায় প্রতীয়-মান হইবে যে কোর্ট ফিন্ প্রচলিত হইয়া লোকের কোন রূপ স্বিধা ইওয়া দূরে থাকুক বরং পদে পাদ অস্বিধা হইতেছে। ভরসা করি গাবর্ণমেন্টের এ দিকে দৃষ্টি পাড়িবে।

গত কল্যের কলিকাতা গেজেট পাঠে জানা গেল যে বাঙ্গলার সর্বতেই প্রাচুর রুট্টি হইয়া গিয়াছে। ধান্যের আবাদ যেরূপ হইয়াছে এরূপ প্রায় অনেক বার হয় নাই। যেরূপ রুটি হইয়াছে যদি মাঝে মাঝে এরূপ রুটি হয় তবে অতি উংক্টি আশু ধান্য হইবে। সর্বতেই চাসাদের হৃদয় আনন্দে উৎফুল্ল হইতেছে।

বোদ্ধ ইয়ের এক জন প্রধান লোকের মৃত্যু হইয়াছে। ইহার নাম ডাজার ভ দাজি। ভারতবর্ষের মধ্যে ইহার তুল্য হিলান অতি কম লোক
আছেন। ইউরোপেও ইহার যথেষ্ট স্থখ্যাতি আছে।
ইনি এক জন গরিব ব্রান্মর্ণের সন্তান। ইহার পিতা
সন্ধাদ আশ্রম অবলম্বন করিয়া পর্বতি গুরায় বাদ
করিতেন। ভদাজী ইহার নিকট হইতে অনেক শান্তীয়
বার্ত্তা পরিজ্ঞাত হন এবং দেই দকল প্রকাশ করিয়া
ভিনি জগত বিখ্যাত হইয়াছেন। ভদাজি অতি দচ্চরিত্র লোক ছিলেন এবং যাহার দংঅবে এক বার
আদিতেন ভাহারই মন আকর্ষণ করিতেন। ৫১ বংশর
বর্ত্তমে ভাহার মৃত্যু হইয়াছে।

मश्याम ।

— মিবারের লাজেরত্ব সম্বাদ দাতা লিখিয়াছেন বৈ বারালগীর বারু হরিশক্তে একটা কাপডের কল কান বিলাত হইতে তানাইয়া এখানে বস্ত্র প্রস্তুত কিংবেন, তাহারাভ্রম বিশুর অর্থ উপ্লাক্তন করিবেন না।

লিখিয়া পাটাইয়াছেন। একটি ছোট লোকের ছেলের গুলাউটার মৃত্যু হয় তিটি লোকের মধ্যে খেমত রীতি আছে তাহার পাতা একটা মান্তরে বাধিয়া তাহাকে জলে কৈলিয়া দেয়। সাত দিন পরে ক্ষেক জন চাসা, একটু দরে মনুষ্যের কাতরোজি শুনি তাহার আহার দিনিভিয়া নিয়া দেখে যে উক্ত বালকটী, মরার ভার পাড়িয়া চিটি করিতেছে গ্রং কতক গুলি কাক আতে ২ খেদাইতে ছা কাক গুলি তাহাকে মরা বিবেচনা করিয়াখাইবার উদ্যোগ করিতেছে। চাধারা তাহাকে তুলিয়া বাড়ী লইয়া যায় এবং তাহার পিতা মাতা খবর পাইরা ভাহাকে গ্রেলা ইয়া যায়। কিন্ত আশ্চার্যার বিষয় যে প্রালশ এই খবর পাইরা বালকটার পিতার ন মে ইহাই বলিয়া নালিশ করে যে দে তাহার জীবিত ছোলকে জলে ফেলিয়া দেয়।

কাসাণির রাজা গোলত কোটে তাহার পুত্রে ইংরাজী ভাষা শিক্ষা দিবার নিমিত প্রেরণ করিয়াছেন। সময়ে হয় তাইংরে জরা ইহাকে একটি ভেপুটি মাজি-টে টি দিবেন।

নি কাছেল কাছেল নামক আর এক জন ইংরেজ সত্র মুদলমান ধর্ম গ্রহণ করিবেন। ইনি ত আমা-দের ক্যামেল সাহেবের সম্প্রিয়ি নন?

ত্রা থাইতেছে কসিয়া রাজ ছহিতা অন্তঃস্বতা ইইয়াছেন। মধ্য কুমারের সহিত ইহার পাচ মাস মাত্র বিবাহ ইইয়াছে।

শ্রনাণি যুদ্ধের দৈন্যাধ্যক্ষ সার সাণিত এলদেলী বলেন যে আসাণিত রাজ্যে মাচ মাংলের পারবর্তে লোকে শামুক খায়। সেখানকার স্ত্রীলোকের।
পুক্ষ অপেক্ষা বলবান এবং অত্যন্ত সাংসের সঙ্গে
যুদ্ধ করে। আসাণিতরা পোতালিক ধর্মক্রেণন্ত।
তাহাদের ঈশ্বর মঙ্গলময় নহে, অমঙ্গলময়। পৃথিবীতে
এমন জিনিস নাই যাহা তাহারা পূজা না করে।
মনুষ্য বলিদান তাহাদের অত্যন্ত প্রচলিত। শুক্ররার
ও রবিবার ভিন্ন আর প্রতি বারেই ৮/১০ জন মনুষ্যুকে
বলিদান দেওয়া হয়। আসাণ্টির রাজা এই প্রথা উঠাইয়া দিতে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন।

নাসলিয়ার লোকদিনোর বিশাস যে ইংলপ্ত ফাস
যার অধীন । ইংলপ্ত যেরপা কসিয়াকে ভয় ও খোসা
মোদ করেন তাহাতে সহস। এই বিশ্বাস আণি তে পারে।

—বিক্টরিয়া দিবিল স্বিক্সের জন্যে এক জন চীন

দেশীয় ছাত্র উপস্থিত হন। তিনি থ্রিক, লাটান
ইংরেজী এবং অস্ক শাস্ত্রে উতীল হইয়াছেন।

লগুনের এলফিনফীন কম্পানি গ্যামের রাজার জন্য এক খানি রূপার বাসন প্রস্তুত করিয়াছেন। উহা ১৫০০০ আউস ভারি এবং উহার মূল্য এক লক্ষ্

বিটীণ সৈনোর মধ্যে পাঁচ জন য়িত্দীয় আছেন। ইহাদের ছই জনকে সম্পুতি বিশেষ সন্মান করা হইয়াছে।

—সর্প দংশনের ঔষধের আর পরিসীমা নাই।
মাজাজ টাইমসে এক ব্যক্তি লিখিয়াছেন যে তাহণর
এক খানি পাথর আছে তাহা দার। তিনি, সপ
দংশন আরোগ্য করিতে পারেন। তঃখের বিষয়
পরীক্ষা করিতে গোলে সপের কোন ঔষধই খাটে না।

ভিলেন। তিনি একবার সরকুটে বহির্মত হইয়া কয়েক জন সাপুডিয়াকে সাপ খেলাইতে দেখেন এবং উহা-দিগকে ধরিয়া আদিতে আজ্ঞা দেনা উহারা শুনিবা মাত্র সপ গুলাকে ফেলিয়া প্লায়ন করে। মাজিষ্টেট সাহেব ঐ সকল খল জন্তকে লইয়া হাজতে দেন। আদ্ দালতে কেহ তামাক খাইতেছে দে খিতে পাইলে সাহেব চাপরাশি পাচিইয়া গুড়গুড়ী গ্রেপ্তার করিয়া আনিয়া গরিব গুড়গুড়ীর হাজত দিতেন! বিজ্ঞান কর্মীয় গানিবদৈট শত কর। ৪ টাকা স্থেদি আডাই কোটি টাকা কর্জ করিবেন। ৫০০ এবং তদতি বিজ্ঞ টাকা কল্জ লওয়া হর্মের। এই নিমিত ৮ই জুলাই প্রান্ত গ্রণ্ডেই টেণ্ডার লইবেন। টাকা চারি কিভিতে দিতে ইইবে, অথাং আগফা, সেপ টম্বর, অক ট্রধ এবং ন্যেম্বর মালের প্রথমেন আহাদের টেণ্ডারই আহা বেশী টাকা দিতে প্রারিবেন আহাদের টেণ্ডারই আহা

হই য়াছে। বেশধ হয় ত্রিশ হাজার সিন্দুক আফিং পান ওয়া য়াইরের। তা চলালী নামেন আফিং পান

िर्गार्थिय हिंगाला नामक व्यादमित्रकात क्लाम कार्मान विक जगहेर वाज जाति जानी मानि इ इशाएक न। माजि मार्श्व নামক একজন ইংরেজ সেখানে ব্রিটিণ বাইস কলাল পদে नियुक् ছिल्नन। शिथि। दिमालात रेम्र शाक्षा का तमनत भनदक লে সের দক্তে তাহার বনিত ন।।তিনি এক দিবসা মাজি माद्यत्क ठाश्व मगोदश जामि छ छ म् म कद्वन, किन् माद्य जोशां अभि (थाए। এই जोशां ज कतिया छेशा छि र्गना । रेश्टिक्तमार्थिक जोर्श अधीमस् रेमिनक श्रक्ष দের প্রতি ছকুম দেন যে মৃত কিজীবিত যে কোন অবস্থায় गोंकि माद्श्वदक जाशता जाशत निकंषे शांकत करते। माजि भार्यस्क धित्रा जानित्स व्यथम जोशांक शिखलित छज। मात्रिया यजशात्रांनाखि অপ্নান করা হয়। তৎপরে তাহাকে বধ করিয়া ফেলি-वात उरा दिन्यान इरा। किन्छ दिन्यादन जनगन्। कन्म ठाती যাহারা উপান্থিত ছিলেন তাহারা মাজিকে বধ করিতে নিষেধ করায় সৈন্যাধ্যক্ষ ভাহাকে চারিশত বেতাঘাত कर्तात एकूम देनना इहे गंड विवाधांड डाहात भी दे भन िष्ठित्न व्यथान श्विन्द्यदेश्वे देनमा अभूनश (महे स्रादन উপান্থিত হইয়া তাহাকে রক্ষা করে ।

- मन्यु जि लखन विश्व विमानिद्यंत मात्रा मात्राख इइंशिष्ट या खीलारक शतीकात छेडी। इइंटल जियी অথাৎ বি এ প্রভৃতি উপাধি গ্রহণ করিত পারিবেন। এ সম্বন্ধে অনেক তক বিতক হয় এবং কি কামক धक । अने मिट्य वटनन खीटनाकि किराक कान षेशिशि ना मिया जादाता श्रीकांग ऐजीन इहेल जादा-निशंदक धक थानि यथगि । भव मित्नई अपूत इरेदन। जार्षत विदेशकार्य खोल्लारकत्र यिन वाकिलात जाव আট্ন প্রভৃতি সাখ্যাধারণ করে তাহা হইলে শুনিতে ভারি হাসাশসদ হইবে। এসম্বন্ধে তাহার বিশেষ আপত্তি अहे (य श्रक्य मि. शंत व्य उत्याशी इहेश यमि खी ल्या क পারীক্ষা দেয় তবে তাহাদের প্রধান ভূষণ সুশীলতার অনেক হাস হইবে এবং স্ত্রী জাতির স্থূণীলতার অনিষ্ট श्रदेश, यत्र्या, जाजित वित्यय जिनिष्ठ श्रदेश। इलिया है नां यक जन मार्ड्य वर्लन (य ज्या मडा वर्डे, किछ अत्नक स्रो लाक आहा याशापत श्रक्षात नात्र व्यत्नक छन वार्ष्ठ। जाश्रापत छेक निका एम अरा निजास প্রায়েশজন এবং সম্ভবতঃ শেষে বিশ্ববিদ্যালয়ের সম্ভারা দেখিবেন যে বিলাতি জীলোক মাতেরই পুক্তবর আয় বল वीर्या, तुकि, जाश्राता श्रकत्यत ग्राय हममा हत्क (मन, द्या-ভায় চডেন, শিকার করেন, নানা স্থানে ভ্রমণ করেন, স্থতরাং তাহাদিগকে নিতান্ত সেকেলে স্ত্রী জাতির মধ্যে পরিগণিত করা যায় না এবং পুরের যে নিয়মানুদারে স্ত্রী জাতিকে পরীক্ষা দিতে নিষেধ ছিল এক্ষণকার স্ত্রী জাতির উপর দেনিয়ম আর খাটে ন।

কাটল ফিশ নামক একরপ মৎদ্য সমুদ্রে বাস করে।
উহা সচরাচর দেখা যার না। গত ১০ দে বন্ধ উপসাগরে
এক খানি জাহাজের লোকের। এই রূপ একটি মৎদ্যা দেখিতে পার। উহার শরীর জাহাজ অপেক্ষাও রুহৎ
বোধ হইয়া ছিল। এক ব্যক্তি উহাকে গুলি করেন। মৎস্যাট গুলি খাইয়া জাহাজ মুখ আন্দে এবং উহার শরীন
রের আ্বাতে জাহাজ ডুবাইয়া দিতে চেটা করে।
ক্রেম মংসাট জাহাজের উপর তাহার কতক শরীর উটি
কর্ম দেয় এবং অবিলম্বে জাহাজের পাল, মাস্তল,
হাল সমুদার চুর্ব করিয়া কেলে। একটু পরে জাহাজাট
জল মর্ম হয় এবং কেবল এক ব্যক্তি ভিন্ন আর সকলেই
সমুদ্রের গর্ভে প্রাণ ত্যাপ ক্রিয়াছে।

—भार्यमा, मालक्षि इ हे एउ धक वाङि लिथिशार्ष्ट्यः— " ময়মান সিংহে এক দিবস ৫ টাকা চাউলের দর হওয়ায় প্রায় ৩। ৪ শত লোক জজ এবং কালেকটর দাহেবের নি চট যাওয়ায় কালেকটর সাহেব তাহাদিগকে ২০০ টাকা দান করিয়াছেন এবং তি ন মহাজনদিগকে চাউল किना वक्क क त्रश (वह छक्म मित्राह्म य २॥० छोका ० টাকা মুল্যের অধিক কেছ চাউল বিকৃয় করিতে পা-तिदव ना। धक मिवम काङ्गि ते बाहे मिश्र हा छेल दाया ह ० थान त्नोका याइटा ছिल, इर्डिक श्रिशी एक श्री তिन थानि त्नीका একে वाद्य लूठ कि शाइ। এই मालि अ প্রামে শ্রীয়ুক্ত বারু অমৃত লাল সরকার একটি শিশে বি-দ্যালয় স্থাপন করিতে চেন্টা করিতেছেন। তিনি শিল্পা विमाग्य त्य ज्ञाश शर्रे निक्चार्थी मिश्र क यमि मत्नार्याश পূব্ব কি শিক্ষা দেন তাহা হই:ল বড়ই সুখের বিষয় হয়। পাবনার অধীন মণীদহ, কদমতলা প্রামে বড়ই ব্যা-প্রাহত এবং এক জন রাখালকে হত করিয়াছে। স্থানীয় माजिए इएछ त निकछ धार्थना (य, जिन निकातीशनएक छे । भाष्ट मिशा भीष वाष्ट्र छ लि विना भ करतन।"

"इर्डिक्तित ज। युविष्यक मम् । ज्या क्रममं श्वल इरेट्डिष्ठ् । শালচাপরা নিবাদী অর্মমিয়ার বাড়ীতে ২৫০০ টাকার জিনিষ অপহত হয়। তাহাদের সঙ্গে তিনটি মশাল ছিল। তারাপুরের এক জন স্চিকর্মকর সিতলপাটীর একটি বারাঙ্গনার সহিত আমোদ আহলাদ করিতেছিল এমন সময় একজন লোক কুদালি দ্বারা উভয়ের হাত পো কাটিয়া ফেলিয়া পলায়ন করিয়াছে।"

— इंश्लिगगांन मान् পত नागक পত্ৰিকা इंह्ट এই গ-পাটি উন্ধৃত করিয়াছেন। এক ব্যক্তির বিবাছ করিতে ইচ্ছা হয়। অনেক যত্নে নিকট র প্রামে একটি কন্যা পাওয়া যায়। নিবাহের দিন স্থির হয়।বরের বাডীতে কন্যা লইয়া বিবাহ দেওয়া সাব্যস্ত হইল। কন্যাকে একখানি চেয়ারের উপর बमाइशा करत्रक जन कू नि षात्र। वरत्न वाछी लइग्ना याउग इय। তাহাকে একটি আঙ্গুরের বাগান ও নিবিড জঙ্গল অতিক্রম করিয়া আদিতে হয়। এই জঙ্গলের নিকট উপ-স্থিত হইলে চেয়ার খানি অত্যন্ত ভারি চেকিতে লাগিল, কিন্ত কুলিরা ভাবিল যে তাহারা ক্লান্ত হইয়া পডিয়াছে विलय्। अत्री (वाध इहेट एक्। क्रिय वद्य व कि कू लय्। আকিয়া চেয়ার নামাইল এবং চেয়ার যে কাপড দ্বারা ঢাকা ছিল তাহা উঠাইয়া দেখা যায় যে উহাতে হুটি কন্যা विमिशो আছে এवং তাহাদের নেখিতে ঠিক এক রকম। मक लि ए पिश्रा ज्याक ! किन्छ का विविध विवाह इत পাত্রী তাহা কেহই শ্বির করিতে পারিলনা। বিবাহ বন্ধ ইইল। কন্যার মাতাকে তাডাতাডি খবর দেওয়া হইল। करात गाउ मा ना। अ हि म ज भा ति ना (य (का गि তাহার নিজের মেয়ে। মহাত্লুজুলু বাধিয়া গোল। কন্যাটীর নামধরিয়া ডাকা হইল উভয়ই "কি" বলিয়া छेखत्र मिला। जीङामिशा कि ज्ञामा कत्रा इहेल (य श्राकृत विवाद इत शाबी दक ? উভয় ই উ छ त कर्ति रा छ है ल 'आभि।' धाउयथन शाम ७७ उथन शाम, धाउ यथन कथा कर् ७७ তখন কথা কয়, উভয়ের বাহ্যিক হাব ভাব সমুদয় এক রেকম। কন্যার মাতা এক ফিকির বাহির করিলেন। তাহার কন্যা এক দিনে তিনটী কাপড বুনি,ত পারে, অত এব যে छे इ। न। পाরিবে সেই ক, ত্রিম কন্যা। তাত আমা হইল धावश छेखाई প্রাতঃকাল হইতে সন্ধ্যা পর্যান্ত কাপড বুনিতে माशिल। किन्छ य त्राजि इइत्राष्ट्र आत উভয়েরই চিক এক সময়ে তিন খানি কাপড ৰুনা শেষ হইল। আপপ।-তত বিশাহ স্থািত র হয়াছে এবং মাজিটেইটের নিকট এই বিষয় খবর দেওয়া হইয়াছে।

—काटिश्चन गार्तिमन नामक এक জन क्लिन्ति हिस्सा नि-क्षित मृजा इहेशाएए। इहात ভবिষাত छानिया। क्रमणा ছिল। इंश्व श्वाना जात्नक था हिंद्या शिवाह । जात्निक रेश्टिक याञ्चकत विलिया जा: नन, किन्छ याश्वा रेश्टिक दिशंव क्रिया हिनिएडन डार्ग्या हेराक बाहुड ক্ষতাসম্পন্ন ব্যক্তি বলিয়া স্থীকার করেন। এগার वदमत इडेल मात এए छशाएं विन होत हे हा क जुशा होत विद्यान । कारिश्वन धरे निमिन्न जार्शन निम कर्तन।

इहे জन वार्तियोत ममर्थन करतन । लर्ड लिएन, जाल উইনটন প্রভৃতি প্রাধান প্রধান লোক কাপ্তেনের পক্ষে সাক্ষ্য দেন এবং ভাহারা সকলই স্থীকার করেন যে মরিদনের প্রকৃত অদুত ক্ষমতা আছে, তিনি জুয়াচুরী করিয়া কাছাকে ঠকান না। িচারপতি এই রায় প্রকাশ করেন যে কাপ্তোন জুয়াচোর নছেন।

- পাঠকগণের স্মরণ আছে সার চাল সমরভণ্ট তা-श्रांत खीत नारम इंश्वे विलिया नालिय करतन य जिल মহারাণীর প্রাঞাম পুত্র প্রিন্স অব ওয়েলসের সহিত जिंगिती इहेशिएइन। मकर्मभा छेशिष्ट्र इहेल्ल लिडि मर्जा छेत्रान इहेश छे छेन। मात्र ठाल म हेहारक थ-রিত্যাগ করিবার নিমিত্ত আবেদন করেন এবং সেই ম कर्मभा अथरमा ठलिएएए। অতি সত্র ইহার মীমাংসা २३८व धवर धवर मक्त्रा रहेट मञ्जा इराज মহিলাদিগের সংক্রান্ত এরপ কতক গুলি ঘটনা বাহির इहेरव योका र्ञानित्ल किन्तू इन म ठमिक्या योहरव। (त्वा-রেও হল নামক এক জন গণা মান্য পাদরী ও তাহার স্ত্রীকে জটা বলিয়া পরিত্যাগ করিবার নিমিত্ত অভিযোগ করেন, কিন্ত তিনি এই অভিযোগ উঠাইয়া ल इश्रांट इन এवर यिष जिनि मश्रा श्रां के वालन य ত শহার জী ভ্রুচিরিতা তবু তিনি পুনরায় তাহাকে গ্রেহণ क्रिशांट्य। इंश्ट्रब मगांट थान्त्री माट्यत्व ध्र निभिज किছू मांज कलक इय़ नाई। जिनि मज्द (मणे जिन यम् क्रल धक्छि वक्कृ छ। क्रित्व धर् छेर्। छनि छ ज-निक मञ्जाख लाक डेशश्चि इहेरवन।

- किছू मिन इइल পঞ্জাবের ছই জন লেওয়ে কর্মচারী श के धर्म পরিতাগা করিয়। মুসলমান হন। ইহাদের এক জন পুনরায় জোর্ডানের জল মাথায় দিয়া পৈতৃক ধর্মে ফিরিয়া আদিয়াছেন। তিনি বলি তছেন যে মুসল-गान धटम्ब यजा नाइ।

- तश्रीत, नवावशिक इहेट वातू शाविन लाल मजूमनात लिथिशाट्यः — " আমরা শুনিয়া আফ্লাদিত ইইলাম জীয়ুক্ত জ্যাক্দন সাহেব বাহাত্র নাকি খনন করিয়া দেওয়ার জন্য অতি সত্র গাবর্ণমেণ্টে প্রস্তাব করিবেন। যদি ভাঁছার এই প্রস্তাব কার্যো পরিণত হয়, তবে নিশ্চয়ই বলিতে হইবে যে यश्चा जाक मन जामार्मित এই রাভ্যান্থ রজপুররে मन्भू व मुक्तिमां जा। नेश्वरत्र निक हे खार्थना कर्त्र डाँचात এই মহৎ অভিপ্রায় যেন পূর্ণ হয়।"

—কলিকাতার উত্তর বিভাগোর পুলিশ মাজিট্রেট मण्य जि धकः जास ज विष्ठांत्र थ्राना थिष्णी यप्तर्भन कित्रार्ह्म। र्शिल्य का कि ७० जन शां फार्य मित्र भित्र वा वानित्र माজिए इएछेत निक्छे विछात्रार्थ (थात्रन करत्। माजिए -টের সময় কম, স্মতরাং তিনি গাডোয়ানদিগোর জনে ২ বিচার না করিয়া তাহাদিগকে ছই দলে বিভাগ করিয়া বিচার করেন। এক দলে কুডি জন পালি আর এক मिल চिल्लि जन। मोकी जिन्नविम क्रिए ज्यानक विलय इहेरव ध हे ज:गा भाजिए द्वेष्ठे का हात्र माका लहे लग ना এবং শুদ্ধ প্রালশের কথায় বিশ্বাস করিয়া তাহাদিগের मकल (कई भाष्डि मिटलन। को जित्र विठात अहे विठात প্রণালীর নিকট পরাজয় মানিয়া যায়।

— हेश्लिगंगांन वल्लन य कल्लिकां जात शूलिंग कियान-নার ও ডেপুটি কমিসনারে কোন বিষয় লইয়া বিবাদ वाधिशाट्य। आज काल माट्य माट्य माट्य लाउ। किछू माधातग इहेट छ।

- (वद्यल छोइयम् वर्लन तश्श्रीतत ज्ञ जिल्ला निर्मिमार्ट्य তাহার কর্ম হইতে একেবারে অবসর লইতেথেন।

—এখন প্রায় বৎসর বংসর তুতন তুতন ধুমকেই দেখা मि.ज: इ। किছू मिन इरेल (প्रांकिमत छेरें। कि प्रदेश (क्रिक्स क्रिक्स) মেঃ কগি একটী ধুমকেতু আবিক্ষার করিয়াছেন।

—বেহার ঘোড়া ও খচতরময় হইয়া পড়িয়াছে। इंशादित निमिख श्रेवर्गिक छेखत शिक्तम अक्षल इंश्ड তিন হাজার সহিশ আনাইতেছেন। কলিকাভায় প্রায় ममूनाय महिन (वंश्व जळन श्रेट्डि जाएम, प्रशादन উত্তর পশ্চিম অঞ্চল হইতে সহিশ আনার কি প্রয়ো-কুইন্স বেঞ্চে বিচার হয়। উভয় পক্ষই ইংলণ্ডের প্রধান। জ্বন ছিল জানি না। ছর্ভিক্ষ প্রীড়িত অঞ্চলে দেশ কুরি লেন।

पि"। खंत इहेटक लाक जानाहेश श्वर्णभाषे जार्थ! शक्रशाल वाशाहरक्रिं।

— গত বৎসর যেরপ কম স্থৃতি হয়, ১৮১৭ আব্দের পর এত কম রুষ্টি কোন বৎসর হইতে দেখা যায় नाई। शंक दरमत या मारम यक्तर जीषा शर्फ धक्तभ छ ने विष्म दिन महिन महिन प्रा किया को निर्म को निर्म को निर्म গত জাতুয়ারী মাদের ন্যায় শীত কখন কেহ অতু-ভव करड़ नाई। वांकलात ভেতিক পরিবর্ত দেখিয়া কেছ কেছ অনুভ । क: तम य इहा ज विश्वामी मिट शह छ সত্ব কোন না কোন প্রাকৃতিক পরিবর্তন হইবে।

—সার রিচাড টেম্পালের হিসাব বোধ চির কালই कितिया वरमन स्व भागिर्मिट छेत आंत्र आर्थक। वास एवत (वनी পिডिर्व धवर छे। क् म न। वाफाई ल शवरिष्ठ पिউल्ल इइंग्रा याइरवन । किছू मिन शरत धकान পাইল যে সার রিচাড টেন্সালের ঠিক দিতে ভুল হইয়া ছিল এবং গাবর্মটের টাকার অনটন দুরে থাকুক शवर्षियण्डेत उद्योल साल काडी छोका मञ्चू आहि। इर्डिक मध अल मांत तिहार्ड (हेन्श्रल (गरे तिश हिमाध পত্র দিতেছেন। প্রের্ব তাহার রি:পাটে লিখিত হয় य य भारमङ्ग्राकामानि ३७৮०००० योग छाउल इडिंग्लंड নিমিত ব্যয় হইয়। গিয়াছে। আপ্ৰায় তাহার গত ছুভিক্ষ मस्कीश तिर्शिष्ट लिथिज इहेशोर्ड (य अट्डे य शर्शन ৫५०००० भाग ठाउँ लाब (वनी वास इस नाई। इडिंग्क्त নিমিত্ত যেরাপ চাউলের ছডাছডি ও অর্থ নাশ হইতেছে তोश्टि य এই त्रश शिमां व मार्या २ (नथा यो इत जाहा ' थक तथ जरू जर कहा याहेट अभरत।

ক্পরতলার বাজার স্বাস্থা লাভ করিবার কথা शूट्य खना योग किन्छ अकन जोका भिया। दिन्ध इहेट एए। जिन मन्भान छेत्राम इहेशा छेत्रिशाष्ट्रम ध्वर धक मिन জানালা খুলিয়া বাহিরে লম্ফ দিয়া পডিয়া, অভান্ত আখাত প্রাপ্ত হন। মদেই ইহাকে দ্বে নাল করিল।

— (बङ्गाल वा। दङ्ग न न न न न न क क क व। इहे छ। का क-মিয়া গিয়াছে।

— य मकल कुलका य वाङ्कि की शका इहेट हेल्छ। करवन जाशादमत निर्मिख अकि अकि अख मशाम। अक-थानि निष्ठेइ ७क शिविकाश धरे विवत्नी लिथा इह-য়१एছ। এক वाङ्कित भावीत्व ञाङा अभश्म इक्षि इत। এমন কি তাহার শরীর নিয়া চলা কেরা ভার হইয়া উঠে। তিনি হোয়াইটহলে উপস্থিত ছইলে এক জন ডাক্তার তাহাকে কীণকায় করিয়া দিতে চাহেন, কিন্ত यलन (बाधीत जाशां जिल्ल करो महा कति इस्ता कुलकाश मञ्चा विलिलन जिनि मकले तक्य कछे महा कर्ति एक अधिक जार्ड्न। जाक्रांत जाक्रांत जक्ति टिनियाक जाकिलां लहेश शिलन। सिथान जाहात शांज इहेट ममूनां रमन छिलि थूलिया लख्या इहेल धवर अकृष्टि विद्यार जत यह जारनक अनि जोत नोशो देश তারের প্রান্ত ভাগ গুলি তাহার শরীরে আধ্বন্ধ করিয়া (म अ शां इ हेल। जे जात्र कि शां जा हो त न ती दित्र व मरधा वि-- श्रां मक्षां लिं इहेट लाशिल। (तारी यञ्चनां युष বিকটাকার করিতে লাগিলেন, কিন্ত তিনি অত্যন্ত ধৈয়া धित्रशिष्ट्र इहेश। विनिशा थाकित्लन। এक हे भारतह ला-दीत कियश याइटिं लाशिल, जिनि ज्या जिय कीन কায় হইতে লাগিলেন এবং তাহার গায়ে যে একটি काशिक ছिल তोश्यूलिशं शिष्म। श्रुलकांश यशूरश्त আশিন্দ আর ধরে না। তাহার শরীরে বিছাত বাশি প্রবেশ করিয়া ভাষাকে অশেষ কন্ত দিতে লাগিল কিন্ত তিনি তাহা আহা করিলেন না। একটু পরে বিহাতের यदञ्ज ভয়ানক একটি শক इहेल। ডাক্তার চমকিয়া উঠিলেন। তিনি জানিতে পাইলেন যে নিউইওর্ক আফিশ इरेट अ लंक आगिरङ ह। ऐहिल्लाक स्यार्श जिल निडेउक वाकित्वंत लाकिमिश्क जिल्लामा कित्रिश शांठाईटलन (य विषश्छ। कि? जांडात्रा देखत मिल (य नी श जात का हिंशा भी अ, नटहर या यूटनत हिर्दि जा श्राहण व वाकिन शतिश्री रहेल। जाकात जाजा जाज जाज न-কায় মনুষোর গাত্ত হইতে তার গুলি কাটিয়া দিলেন এবং রোগী আনন্দে হতা করিতেং বাভি এত্যাগ্রমন

— চিলের। কাসগার এবং কালডসা আক্রমণ করিবার ভয় প্রদর্শন করিভেটে। কাসগারের আমীর কসিয়ার সাহাযা লইয়া যুদ্ধের নিমিত্ত প্রস্তুত হইতেছেন। বোধ इशक मिशा धरे जूरयोर्श हिन (मर्भे अधितम करित्र ।

—কলিক।তায় কাত্যম কলেকটরের নিকট কোন বিয-(য়য় আবেদন করিতে হইলে তাহাতে রসিদের টিকিট ला गारेश (म एशांत य था शिंग छिल छोशां भी अला जून इहे (७ डिजिया (शन। अर्थन डेहात शित्रवर्ष्ड अक व्याना (कां हे कि याव हां त कतिए हे रेव।

— जाभाभी जूलाई मारम एक छ जव इ छियात मन्भामक জ জ निया भार्य विला । श्रामन कति एउट्या । इश्त স্থানে লেখবিজ সাহেবের নিযুক্ত হওয়ার কথা ছিল, কিন্তু শুনা যাইতে ছে লেগবিজ সাহেব ক্ষনগ্র ক-লেজের প্রিনসিপাল হইতেছেন, সূত্রাং ফে,তের স-अभिमक (क इन जो इ। अथन अ किक इरा नो इ।

—वाङ्गात्नाद्वत धक जन माद्व धकि जल्न ज्या অভিযোগ করিবার উদ্যোগ করিতেছেন। অতিরিক্ত য়ঞ্জির দক্ষন ভাষার বিশেষ ক্ষতি হওয়ায় তিনি মিউনি-मिशालित विक्रम वह कि ज श्रव्रावित नालि कि कि दुवब। मार्ट्वक जाकात्र घाता श्रीका क्रिया मिथान कर्खवा।

(अति ।

(कांडेकिम को न्या।

जाभिन बिलिए भी दिन, कि जिया शेवर्गिम भूकी-कांत्र खोटण्यात शित्वार्छ, अहे खोल्या প্রচলিত করিয়া-ছেন? जाशनात्र। महद्र शांदकन उ स्थिक मा भारमलात वड़ धात धारतन ना, खू उतार এই छोटलात जाक्र जिल्ला তির বিষয় সম্পূর্ণ না জানিবার সম্ভাবনা এবং তাহা जानिशाई वां कि श्रकाः त जामात श्राक्षत छे छत पिर्वन। অতএব প্রথম এই জগত বিখ্যাত কোটফিস ফা-জ্পের আকৃতির বিষয় বিবরণ করি। ইহার আকৃতি। फारकित किंकि जरशका किश्वि वज़। इंशरंड जा-কের টিকিটের মত মহারাণীর মুখাবয়র অন্ধিত আছে धनश्चना जानूमादत इंशां के फारकत किकिए वे शांत नाना तल थांबन करत। अहे পर्याख हेशत आंक्रिक मश्रामा। এক্ণে ইহার প্রকৃতি সম্বান্ধ বলিতে প্রমৃত্ত হইলাম কিন্তু প্রকৃতির বিবরণ কিঞ্চিৎ স্থান আবশাক করিবে धाद श्वादा मका मका मका मका निर्वाद श्री अन इहेट ए हैं।

১। ইহার এক খানার সভিত অপর খানা অতি मङ्ख्य मिलिं इड्रा धकांक इड्रा यांग्र अवर जोड्रापत পারস্পার বিচেছদ করা ছঃসাধ্য হয় স্মতরাং একের স্থানে बुई थोना वावहां वे कतिए वाथा हरेए हा।

२। इंश्रा अভावতः वड़ की ड़ामक ७ को ड्रक প্রিয়। কারণ ইহারা দেখিতে দেখিতে লুকায়িত হয়। विहे (मिथे (हिन विहे नोहे। थुंजून थुंजिए २ यथन जोशनि ক্লাল্ড হইয়া নিজ্ঞা হইয়া বলিয়া আছেন, হয়ত দে-शिर्यम आश्रमात शार्यत होमर्व हेश्य छेश वि-রাজ করিতেছে।

७। इंश्रा आंगला गर्गत वनी जुंड अ अंगू गंड, का-त्र वा भागाना रेष्ट्र कित्रिल रे रेशिं मिग्रिक रखशंड कतिया जात्मक जार्थ छेशां ज कति वि शांद्र।

8। इङ्द्रा मञ्जू भवर्षाय दिन इजम्भरम खन । कांत्रणं अहे खोम्ला वावहांत कतिएक कांगएजत माहाया जावशाक करता (यमन वक्षन वर्ष खत वर्ष वन विना मा-शारिया डेक्टाबिङ इइटिङ शारित ना उभिन धरे कीन्य গাবর্ণমেণ্টের প্রস্তুত করা কাগজের বিনা আগ্রায়ে ব্যব-श्रु श्रुटि शादि ना। जावात (मधून, श्रात्रेश शिल অথবা আগনলারা চুরি করিলে, আহেলা মামলা পুন-রায় মূল্য দিয়া খারদ করিয়া আপন কার্যা নিকাছ कबिएक विशाह्य।

धक छान कारनक हिन्द्र जान धक जन एक जिला निर्देश । डिकिलन '' जामना का छ। नन्न, छ शन ।' जा जा निर्देश

क्लिना तिक स्मिष्ठ ३० छोकात स्थाना विक्र इस তাহা মূহতের মধ্যে নিঃশোষত হইয়া যায় এবং তৎ-পরে কালেকটরি হইতে আনা ভিন্ন আর উপায় থাকে न। এই আমলাগণ ইছা বিক্রয় জন্ম পৃথক বেতন পায় ना जाशवा इंशानिशाक कांन किंगमन पिछशा इंश ना। ইহা বিক্রয় কর। এই আমলাগণের অতিরিক্ত কার্য্য সুতরাং স্বভাবতই এই কার্যা ইহারা সম্ভোষের সহি-ত कर्त्व ना। প্রায়ই ইহারা অনবকাশের আপতি করেন उ वर् मश्थाक जार्ह्ल मामना जाङ्कित षात्रा मधारान হইয়া কাত্র ভাবে শুব স্তুতি করিতে থাকে। কা-लिछेति जामाला इइटा का मृत जादा महाभाग विल-क्वन व्यवशं व्याद्वा । । । । व वात क्रिया वाल्या वामा मा कतिल कि छोन्न शोग्न ना। कि कि व्यम बुर्डा शा (य वि शिव्यम ए क्रिंग लहेशां व्यामर्भ क्र जकार्य। इय ना, शूर्व ३०। ३२ जन दिखात धरे कार्य। করিত, এক্ষণে এক জন আমলা, তাহাও আবার অব-मत भाज, मिरे कार्या निका क किरत, रेश कि कथन मछ्व?

छ। এই छोन्ला थितिम कितिए जात्न कि ना छोक। मिशा २ छोकात म लात छोम्ला शान, क्ट ३० छोको मिशा ৫ छोका मृत्लात এक थान शान। जातिक इंश्तबं জানে না সূতরাং সাপ কি ব্যাং পান তাহার বি-(वहना कित्रवात माधा थाएक ना धवर खोल्म विक्र शू-বের র নায় নাম বহিতে জমা হয় ন!, সুতরাং কে কত छाका मितन उक्ड छाक! स्टान्श शाईन, जाशांत्र नि-ণ্য় হইতে পারে না।

এক্ষণে ইহার প্রকৃতির সংক্ষেপ বিবরণ দেওয়া इड्ल, महानश वलून (य इड्। कि लि। कित जीलत जिरा ना मत्मत जन्य इहेग्राहि।

যশোর।

國:—

भाखिय दित्र ए जा ए ज बहेना।

विशंख अला पट्यल जातिएथ प्रशासन माखिश्र मिडिनिमिश्रानि विवा श्री श्री श्री कि । अकि छिक त्यानी इंश्री ज क ल मश्कािशिक इहेशा है। मिडेनिमिशालि मिर्गिमक ৫० छोका मिट्डिइन। ছाजम्ख (वड्रान्त महर्यार्श कू-সকলেই এরপ প্রত্যাশা করিতেছেন যে ক্রমশ প্র স্কুলের विट्यं छेन्नि इख्यांत मञ्जू । "क्लन श्रिकीय़ ए ।"

मा जिथूरत धरे कन घर जन गरिवजनिक मा जिर दे है রাণাঘাটের ডেপুটি মাজিং ইটের সহযোগে, প্রতি সোম वादत विहाताना न उपरिवर्गन कतित्रा, कूज कूज एकोज-मात्रि मक प्रमान विठान कि ति एक एक । य था था लिए व विन ठांत कार्या निका । इ इ हे (उ कि) कार्या कि (व कि । इ स य ভবিষাতে সাধারণ লোকের ইহাতে বিশেষ সুবিধা इइट्न।

मन्त्र जि त्रांगाघार्डित एज श्री माजिए दे है वाश इरत्त मगील অত্যাচার সম্বন্ধে একটি অভিযোগ উপস্থিত इइंशिट्ट। उ९ मस्तक जानानटि ये मृत थिकान इई-য়াছে তাহাতে এরপ প্রতীতি হইতেছে যে সুরা পানই এবিষিধ ঘটনার একটি প্রধান মূলীভূত কারণ। চত্ত প্রামাণিক নামক এক ব্যক্তি প্রতিজ্ঞা পূর্বক এই মর্দ্রে এজাহার করিয় ছে যে গাত ১৭ই জ্যৈষ্ঠ শনিবার রাত্র व्यान्माज इहे छोत मगर नानिष्ट्यन तारा, अ ताज क्रम तारा उ लाल (माइन চটোপাধায় এবং यक ভটাচার্যা मन्म অভি-প্রায়ে তাহার মৃত মাতুলের বাস বাটির মধ্যে প্রবেশ कतियां नाना विध ञाजां जात कित्रिया ए ता विध जाता कि वाषीटि डोश्व मञ्दलव माठा अ विश्वा खी धवश आंत्र এक छी युव छी खीरलाक छे भरत त्र यद व्यव इ इ जन बालक নিচের ঘরে শয়ন করিয়াছিল। এজাহার প্রমাণের নিমিত ে। ইহারা অভিশয় ত্রন্থাপ্য। অনেক পূজা যে তিন জন সাক্ষী জোবান বন্দি দিয়াছে তাহাতে স্তব স্তাত্র পর ইহা দর পাওয়া যায়। এই ফাল্প এরপ প্রকাশ ষে, পূর্বোক্ত চারি ব্যক্তি বাটার জন্ম এহণ করাব্ধি বেপ্লেরদিগের কমিসনের উঠানে উপস্থিত হইয়া এক জন বলিল "ঠাকুর ্লিভি ভিডিয়। গিয়াছে এবং এই সকল ফ্রান্স বিক্রয়ের ঝি হয়ার খোল" তাহাতে বাটিস্থিত এক জন ভার আমলার প্রতি অপিত হইয়াছে। ইছা কেবল জিজাদা করিল "তোমরা কারা" ইছাতে প্র-ঠুট খ্রানে বিক্রে হয় ও ছুই জন আমলায় বিক্রে করে। বেশকদিগের মধ্যে এক জন রস ভাষ প্রসঙ্গে বলিয়া

বাটির লোকে দার না খোলায়, প্রবেশকারকেরা রা-গালিত হইয়া, নিচের ঘরের কপাটে লাঠির গুতা এবং উপরের ঘরের জানলায় ইট ফেলিয়া মারিতে লাগি-ल्न। इंशाङ मिर वांनित खी ल्लाकिता ही कांत्र শব্দ করিতে আরম্ভ করায়, পাড়ার লোকের বিদ্যা ज्ञ इहेटल, जोशांत्री शोलयोशोत कांत्री क्रांनिएज मिरे वाहित मगी शवर्डी इंड्यांय, তां शिमिश्क (मिथ्या थेरवर्ग-कांत्रकत्रा शलांशन कतिलन। जामाभीशंदगंत्र किखि পরিচয় দেওয়া কর্ত্ব্য।

व्यामामी ममी ভূষণ রায় এক জন मृত धनी लां कित

ञानाभी बांक कुछ बांब भिष्ठिनिनिशाल माठवा हि-কিৎদালয়ের নেটিভ ডাক্তার।

(এই प्रहे জনেরই বিলক্ষণ সঙ্গতি আছে।)

वामामी लाल भाइन हर्षाशाशाश वक जन धनी अ मख् । ख कू निन बाकात्व जाशित्व ।

आभाभी या उ उ दि र्वार्थात विद्यं भित्र भित्र व व व व व व इहेट भारत नाह । अहे घटना भाषिश्रद्रत काभारी পাড়ায় হইয়াছে।

@:---

পত্র প্রেরকের প্রতি।

बीदारजन्म दारा, मूर्निमार्गम—वाजिमशर्अत जिम-দার বাবু শিতাব চন্দ্র নাহার স্খ্যাতি করিয়া লিখিয়া-ছেন। ইনি ইহার ছর্ভিক্ষ পীড়িত প্রজাদিগকে নানা निक छे इहेट था जन। लहेट एहन ना, (यथारन जल कर्छ-(मश्रात्वरे श्रुक्तिशी थनन कर्तारेटिए इन, अत्राथ पक বিজ্ঞাপন প্রচার করিয়াছেন যে যে কোন প্রজা প্রজ-त्रशी थनन क्रिट्ड होहित्व डाइरिक्टे विना मूल्ला मनन मिद्यम, ञकां ज्दा ठाउँल, तूछे, ছোলা ইত্যাদি विज्ञन করিতেছেন এবং তাঁহার প্রজা মাত্রকে এরূপ অভয় দান করিয়াছেন যে যাবৎ শস্য ভাল না হইবে তাবৎ তাহাদের নিকট হইতে খাজনা লইবেন না। धमन कि आिक्रमशेक्ष इहेट शोष्ट्रिक कि लोका विश्वाहर করিয়া তাহার দিনাজপুরের প্রজাদিগের নিমত অন-বরত পাঠাইতেছেন। কোন রিলিফ কমিসনার গাড়ী চাহিবা মাত্ৰতংক্ষণাৎ তিনি তাহা যোগাড় করিয়া দিতে-চ্নে এবং তাহার জমিদারির উপর দিয়া রাজা হওয়ার বিষয় কাকেটলর জানাইবা মাত্র তিনি তৎক্ষণাৎ তাহা বিনা মূল্যে প্রদান করেন। শেতাৰ বাবুর দেওয়ান বাবু জগচ্চতদ্র পণ্ডিত দারা এই সকল কার্য্য স্মচারুরপে इहेट । পত প্রেরক বলেন তিনি অনেক জমিদা-রকে দান করিতে দেখিয়াছেন, কিন্ত শেতাব বাবুর नागा जूग्श्थल शूर्यक मान कतिए काश्रक अ (म् १ न न न र ।

नेनान ठच्च मूर्थाशाधाधाधाधाभाग्य धानका जिनक जिन थियार्ष्ट्र व थार्पि जिनिया व का का व दि इ देशार्ष्ट् उ करमरे रहेर उछ। काँ वि उजारन स्माउन वार्छन ३२।३७ শের বিক্রম হইতেছে। লোকের অত্যন্ত কট হইয়াছে এवर व्यत्निक इरे जिन मन्त्रा न। थारेश जीवन काषे । रेट व्ह १

वीव, दिवशांम—दिवशांम दुर्डिक निवांत्री मव किंगिष्ठित्र खात्रा छेख्यक्रिंश कार्या इहेट उट्ह ना लिथियाट्न । পত্র প্রেরক সব কমিটির সেক্রেটারী বারু শিব দাস वत्न्त्रांशांशांदात विषय याश लिथियांदिन छोश यनि সত্য হয় তবে সে অত্যন্ত অন্যায় কথা, আমরা ভরসা করি রুফ্তনগরের মাজিট্রেট এ বিষয় তদারক করিবেন এবং সব।কমিটির সভাগণ কিরূপ কার্য্য করিতেছেন তাহা তদন্ত করিয়া দেখিবেন।

পাবনা, চিথলিয়া নিবাসিনঃ—এদিকে চাউল হুজ্পাপা विलिटिन इया यो शिष्ठ नियम में ठिले भेर्व्या योग श्वर्थिण जोश्व वन्तवखना क्रिल् जात तका नाइन शिक्ट वह शिविका किलकां छ। वाशवां जा व वानका हत्त हो है-

यात शिल २ न१ वाषि इइ ७ প্রতি রহস্পতিবারে শ্রীচন্দ্রনাথ রায় দারা প্রকাশিত হয়।